

सिद्ध



अरिहंत



आचार्य



साधु



उपाध्याय



जैन पाठावली

पुस्तक 1

श्रेणी 1



प्रकाशक

श्री बृहद मुंबई वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ

संचालित

मातृश्री मणीबेन मणशी भीमशी छाडवा - धार्मिक शिक्षण बोर्ड



धार्मिक शिक्षण बोर्ड

Inside cover page

प्रकाशन दिन

वीर संवत : 2548
विक्रम संवत : 2078
ई.स : 26.09.2022

प्रथम आवृत्ति

प्रत : 3000
ज्ञानार्थ : 50 ₹

प्राप्ति स्थान

श्री बृहद मुंबई वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ

: संचालित :

मातुश्री मणीबेन मणशी भीमशी छाडवा धार्मिक शिक्षण बोर्ड

जयंत आर्केड

राजावाडी सिग्नल, हरीवन वामन पेठेनी उपर
ओफिस नंबर 202, घाटकोपर - (पू), मुंबई- 400077

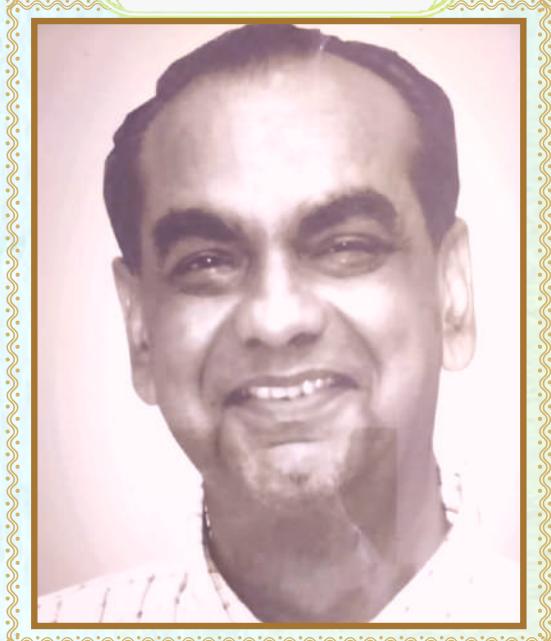
Office : 9702277914

Chaayaben : 9029933775

Chiragbhai : 9820596646



श्रुत स्तंभ



स्व. श्री सुरेशभाई शाहना पुण्य स्मरण निमित्ते

श्रीमती उर्मिलाबेन सुरेशभाई शाह

सौ. उर्मि चिंतनभाई शाह | ची. माही चिंतनभाई शाह

ची. सानवी चिंतनभाई शाह - मलाड, मुंबई

ज्ञानदान योजनामां सहभागी बनी

ज्ञानप्रसारना कार्यमां सहकार आपी

स्वयंना ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम करनार

लोकोत्तर पुण्यनो बंध करनार दाता परिवारनो

धार्मिक शिक्षण बोर्ड खूब खूब आभार माने छे

तेओना उत्कृष्ट भावोनी अनुमोदना करे छे

॥ नाणस्स सब्बस्स पगासणाए ॥

श्री बृहद मुंबई वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ

Shree Greater Bombay Vardhman Sthanakvasi Jain Mahasangh

: संचालित :

मातुश्री मणीबेन मणशी भीमशी छाडवा धार्मिक शिक्षण बोर्ड
Matushree Maniben Manshi Bhimshi Chhadva
Dharmik Shikshan Board,

Jayant Arcade, office No 202, 2nd floor, M.G. Road,
Rajawadi Signal, Ghatkopar (E), Mumbai- 400077

ज्ञानदान महादान

ज्ञान योजना

₹1,00,000/- श्रुतस्तंभ

₹51,000/- श्रुताधार

₹5,000/- श्रुतसहयोगी

₹25,000/- श्रुतप्रभावक

₹2500/- श्रुतसहायक

₹11,000/- श्रुतप्रेरक

₹1000/- श्रुतअनुमोदक

देश-विदेशना हजारो परीक्षार्थीओ श्रेणी 1 थी 24 नी
परीक्षाओ आपीने ज्ञानवृद्धि करी रह्या छे. आपश्री ज्ञानदान योजनामां
सहभागी बनशो अने अन्यने अनुमोदना माटे प्रेरित करशोजी.

Banking Details for DONATION to Dharmik Sikshan Board

A/c Name : Shree Greater Bombay Vardhaman Sthanakvasi
Jain Mahasangh

Bank Name : DENA BANK, Zaveri Bazar, Mumbai - 400 002.

Code : RTGS/BKDNO450008

A/c. No. : 021010025716 Phone : +91 (22) 22018629

चेक / ड्राफ्ट श्री ग्रेटर बोम्बे वर्धमान स्था. जैन महासंघना नामे लखवो.

अतीतनी अटारीएथी

आजे विश्वमां प्रलोभनो वधी रह्यां छे. आजनो मानवी सूर्योदयथी सूर्यास्त नहीं पण मधरात् सूधी यंत्रवत् दोडी रह्यो छे. समय अने निरांत जेवा शब्दो तो एना जीवनना शब्दकोषमांथी क्यारना रवाना थई गयां छे त्यारे प्रश्न थाय छे के, आ बधी दोटकोना माटे ?

त्यारे जवाब छे के, सुख, समृद्धि, अखूट संपत्ति माटे.

पण शुं आटली दोडादोड कर्या पछी आ बधुं मळे छे खरुं?

कदाच यंत्र युगमां समृद्धि अने संपत्ति मळी जाय छे पण जीवन यंत्रवत् बनी जाय छे. अने सुख-शांतिना हवातिया मारवा छतां सुख-शांति तो वहेंत छेटा रही जाय छे. दरेक व्यक्ति कोईने कोई दुःखथी घेरायेली छे. आ बधां दुःखोथी मुक्त थवुं होय तो सर्वज्ञ तीर्थकर परमात्मानो धर्म अने धर्मनीयथार्थ समजण ज सहायक थाय छे.

परिस्थितिने जाणीने समजीने विचक्षण दीर्घद्रष्टा वडीलोनी आगेवानी लईने अंदाजे 60 वर्ष पूर्वे एटले के, 30-07-1961 ना बृहद मुंबई स्थानकवासी जैन महासंघनी आगेवानी हेठल मातुश्री मणीबेन मणशी भीमशी छाडवा धार्मिक शिक्षण बोर्डनी स्थापना करवामां आवी.

जैनधर्मना 32 आगममांथी प्रेरणा लई आगम सागरमांथी मंथन करीने सरल भाषामां तेनो बोध थई शके ते माटे, समस्त विश्वनां स्थानकवासी जैनोना जैनधर्म आधारित विज्ञाननो विकास थाय ते माटे धार्मिक शिक्षण बोर्ड प्रारंभमां श्रेणी एकथी सातना अभ्यासक्रमना पाठ्यपुस्तको तैयार कर्या. आ पाठ्यक्रम तैयार करवामां पूज्य श्री संत-सतीजीओनो अविस्मरणीय साथ सहकार मळ्यो.

पछी क्रमशः संघना विद्वानजनोए course नो विकास कर्यो. जेने कारणे आजे एकथी चोवीस श्रेणीनो course तैयार थई गयो छे अने ज्यारे-ज्यारे जरूर लागी, त्यारे नवी आवृत्तिमां फेरफार पण कर्या छे. वर्तमाने फरीथी आ book फेरफार साथे नवा स्वरूपमां आपणे प्रकाशित करीए छीए. आनी पाछल्नो हेतु आबालवृद्ध बधां आमां जोडाई शके अने वधुमां वधुलोको परमात्माना धर्मनी सन्मुख थाय, एज छे.

समय अनुसार क्रमिक विकास करतां-करतां आजे मातुश्री मणीबेन मणशी भीमशी छाडवा धार्मिक शिक्षण बोर्ड संस्कार सिंचन साथे संस्कार संपन्न भावि पेढीना निर्माण माटे कार्यशील छे.

Course तैयार करवामां अनेक उपकारी गुरु भगवंतो, गुरुणी भगवंतोनुं मार्गदर्शन मळ्युं छे. अने ए मार्गदर्शन अनुसार अभ्यासी श्रावक-श्राविकाओए पोतानुं योगदान आप्युं छे. ए दरेकनुं अमे अभिवादन करीए छीए.

आ Course ने कारणे आज सुधीमां लाखो लोको परीक्षाना माध्यमथी जैनत्वना संस्कारने पाम्या अने भविष्यमां पण वधुमां वधु लोको आ अभ्यासक्रममां जोडाईने सुसंस्कारने पामीने पोताना भाविने उज्जवल बनावे ए ज अभ्यर्थना.

धार्मिक शिक्षण बोर्डनी प्रवृत्ति

1. 60 वर्षोथी जैनधर्मना ज्ञान प्रसार अर्थे जैनशाळा अने महिला मंडळनी धार्मिक परीक्षाओनुं आयोजन करनारी संस्था
2. परीक्षा माटे जरूरी पुस्तकोनुं प्रकाशन.
3. शिक्षकोना अने विद्यार्थीओना संमेलनो योजी तेमने अभ्यासक्रमनी समजण आपवी.
4. श्रेणीनी परीक्षाओनां ईनामी मेलावडानुं आयोजन करवुं.

- ज्ञानदाता शिक्षकोनुं अभिवादन.
- एकथी चोवीस श्रेणी सुधीनो विस्तृत अभ्यासक्रम उपलब्ध अने नवी श्रेणीनो विकास.
- जैन धर्मनुं ऊँडुं ज्ञान धरावता अनुभवी अने कुशल ज्ञानदाता द्वारा धार्मिक अने आध्यात्मिक शिबिरोनुं आयोजन.
- Technologyना माध्यमथी online अने लिखित परीक्षा दरवर्षे जान्युआरी अने जुलाईमां लेवामां आवे छे.
- वैश्विक (globle) परीक्षानुं आयोजन, online certificate अने इनाम वितरण.

आ पुस्तकमां छद्मस्थावस्थाने कारणे

जिनाज्ञा विरुद्ध कांई पण लखायुं होय तो मिछामि दुक्कडम्.



धार्मिक शिक्षण बोर्ड

अनुक्रमाणिका

विषय	Page No.	विषय	Page No.
1. सूत्र विभाग - 40 marks		4. धर्म अने विज्ञान - 5 marks	54
1. सामायिक सूत्रना प्रथम 4 पाठ कंठस्थ - अर्थ सहित	01	5. कथा विभाग - 10 marks	
2. प्रथम 4 पाठनी समजण तथा प्रश्नोत्तर	11	1. नयसार - प्रभु महावीरनो प्रथम भव	57
2. सामान्य समजण विभाग - 20 marks		2. अनोखी जीवदया - मेघरथ राजानी	61
1. प्रभुनाम स्मरणनो महिमा तथा चोवीस भगवानना नाम	25	3. पार्श्वप्रभुनी - अनुकंपा	64
2. 11 गणधर भगवंतोना नाम तथा समजण	27	4. आर्द्रकुमार - पाम्यां कल्याण मित्र	67
3. 16 सर्तीना नाम	28	6. काव्य विभाग - 10 marks	
4. 8 कर्मना नाम	28	1. पंच परमेष्ठी	70
5. 6 कायना नाम	29	2. जैन धर्म	71
6. द्रव्य	30	3. विनय धर्मनुं मूळ	72
7. उपकरण	30	4. ना ना नारे ना ना	74
3. संस्कार विभाग - 15 marks			
1. जय जिनेन्द्र	36		
2. आहार विवेक	40		
3. उपकार भाव	44		
4. विनय	50		

विभाग - 1

सूत्र विभाग

नमस्कार महामंत्र



नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्ञायाणं
नमो लोए सब्व साहूणं

एसो पंच नमोक्कारो
सब्वपावप्पणासणो
मंगलाणं च सब्वेसि
पढमं हवइ मंगलं

- अरिहंत भगवंतोने नमस्कार हो
- सिद्ध भगवंतोने नमस्कार हो
- आचार्य भगवंतोने नमस्कार हो
- उपाध्याय भगवंतोने नमस्कार हो
- लोकमां रहेला सर्व साधु भगवंतोने नमस्कार हो
- आ पांच नमस्कार पद
- सर्व पापोनो नाश करनार छे,
- सर्व मंगलोमा
- आ प्रथम मंगल छे.





गुरुवंदन सूत्र

- तिक्खुतो - त्रण वार
आयाहिण - जमणी तरफथी शरू करीने
पयाहिण - (जमणी तरफ वळती)
प्रदक्षिणा करीने

- वंदामि - स्तुति अथवा वंदन करुं छुं,
नमंसामि - पंचांग (पांच अंग) नमावी नमस्कार करुं छुं,
सककारेमि - सत्कार करुं छुं,
सम्माणेमि - सन्मान आपुं छुं,
कल्लाण - हे गुरुदेव! आप कल्याण रूप छो,
मंगलं - मंगल रूप छो,
देवयं - धर्मदेव रूप छो,
चेइयं - आप ज्ञानवंत छो,
पञ्जुवासामि - हुं आपनी मन, वचन, कायाए
करी सेवा करुं छुं.



इरियावहियं सूत्र

इच्छामि - इच्छुं छुं

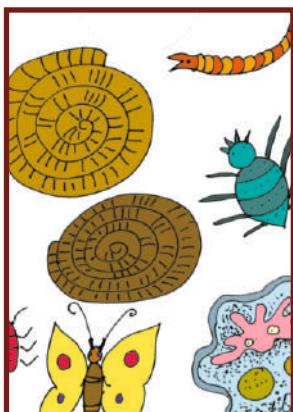
पडिक्कमितः - प्रतिक्रमण करवाने

इरियावहियाए - मार्गमां चालवाथी
थती



विराहणाए - विराधनाथी, हिंसाथी

गमणागमणे - रस्तामां जतां आवतां



पाणक्कमणे - प्राणीओने

कचर्या होय,

बीयक्कमणे - (सचेत्त) बीज कचर्या
होय,



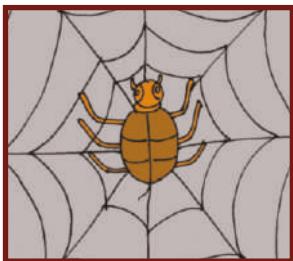
हरियक्कमणे - लीली वनस्पतिने
कचरी होय,



ओसा - बिंदु, झाकळ, ठार,



उत्तिंग - कीड़ीयारां वगेरे जीवोना
दर,
पणग - पंचवर्णी लील, फूग,
शेवाळ,
दग - सचेत्त पाणी,
मट्टी - सचेत्त माटी,
मक्कडा - करोळियानां पड़,



संताणा - करोळियानां जाळां,
संकमणे - पग मूकीने कचर्यां होय,



जे मे - जे कोइ, में (मारा जीवे)
जीवा - जीवोनी
विराहिया - विराधना करी होय,

दुःख दीधुं होय,
एगिंदिया - एक ईद्रियवाळा जीव
(फक्त काया होय) पृथ्वी, पाणी,
अग्नि, वायु अने वनस्पति
(earth, water, fire, air and plants)

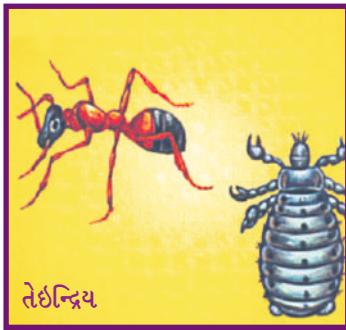


बेर्इदिया - बे ईद्रियवाळा जीव
(काया अने जीभ होय) जेवा के
कीड़ा, पोरा, छीप, शंख, करमियां
वगेरे. (worms, conch, shell,
earthworms)



तेर्इदिया - त्रण ईद्रियवाळा जीव
(काया, जीभ अने नाक होय) जेवा
के कीड़ी, मांकड, जूँ लीख वगेरे.

(ants, lice, bigger)



तेठन्दिय

चउरंदीया - चार ईद्रियवाला जीव
(काया, जीभ नाक अने आंख होय)
जेवा के माखी, मच्छर, भमरा, वींछी
वगेरे.

(flies, bees, wasps,
mosquitoes, scorpion)



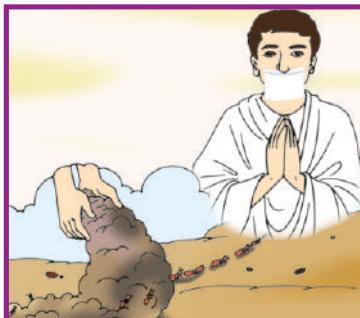
पंचिंदिया - पांच ईद्रियवाला जीव
(काया, जीभ, नाक, आंख अने कान
होय) जळचर, स्थळचर, ऊरपर,
भुजपर, खेचर तथा मनुष्य, देवता,
नारकी.

(devas & hellish beings)



अभिह्या - सामा आवतां हण्यां
होय,

वत्तिया - धूळ आदिथी ढांकया होय,



लेसिया - जमीन साथे मसळ्यां होय,
संघाईया - एकबीजाना शरीरने
अथडाव्या होय,



संघटिया - स्पर्श करी खेद पमाड्यो
होय,



परियाविया - परीताप,
चारे बाजुथी पीडा आपी होय,



किलामिया - किलामना- ग्लानि
उत्पन्न करी होय,



उद्दविया - ध्रास्को पमाड्यो होय
अथवा भयभीत कर्या होय,



ठाणाओठाण - एक स्थानेथी बीजा
स्थाने



संकामिया - संक्रमण कर्या होय,
राख्या होय,
जीवियाओ - जीवनथी ज
ववरोविया - रहित कर्या होय,
मारी ज नांख्या होय,

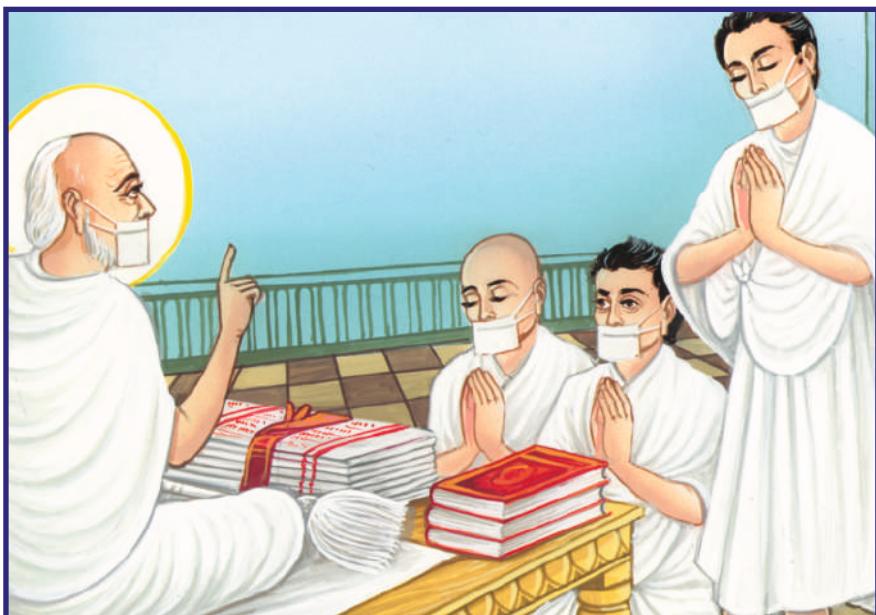


तस्स मिच्छामि दुक्कडं - तेनुं मारुं
पाप मिथ्या (निष्फल) थाओ.



उत्तरीकरण सूत्र

- | | |
|------------------|--|
| तस्स | - तेने (पापयुक्त आत्माने) |
| उत्तरी करणेण | - विशेष श्रेष्ठ (उत्कृष्ट) बनाववा माटे |
| पायच्छित्त करणेण | - प्रायश्चित्त करवा माटे, |
| विसोहि करणेण | - विशेष शुद्धि करवा माटे, |
| विसल्ली करणेण | - त्रण शल्योथी रहित करवा माटे, |
| पावाणं कम्माणं | - पाप कर्मनो |
| निघायणद्वाए | - मूळथी नाश करवा माटे, |
| ठामि | - करुं छुं, |
| काउस्सग्गं | - कायोत्सर्ग (शरीरना व्यापारोनो त्याग) |
| अन्नत्थ | - सिवाय (नीचे बतावेला तेर आगारो सिवाय) |



आगार सूत्र

ऊससिएण - ऊंचो श्वास लेवाथी

(1) (breathing in)



नीससिएण - नीचो श्वास मूकवाथी

(2) (breathing out)



खासिएण - उधरस, खांसी

आववाथी (3) (coughing)



छीएण - छींक आववाथी

(4) (sneezing)



जंभाइएण - बगासुं आववाथी

(5) (yawning)



उडुएण - ओडकार आववाथी

(6) (burping)



वायनिसगेण - अधोवायु

नीकळवाथी (7) (dispersion of bodily gas)



भमलीए - चक्कर आववाथी

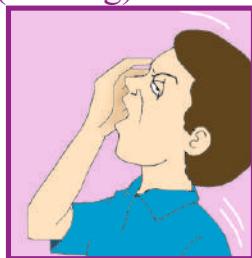
(8) (giddiness)



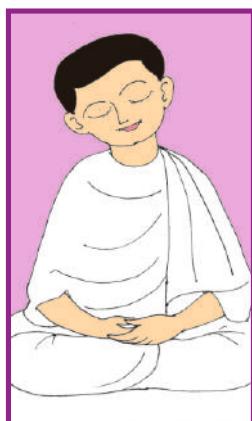
पित्त - पित्तना प्रकोपथी
(9) (vomiting sensation)



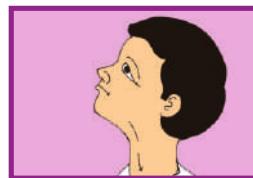
मुच्छाए - मूच्छा आववाथी
(10) (fainting)



सुहुमेहिं अंग संचालेहिं -
सूक्ष्म पणे, जराक शरीरनां
अंगोना हलवाथी (11)(subtle
movements of small parts
of the body)



सुहुमेहिं खेल संचालेहिं -
सूक्ष्म पणे, जराक कफ, थूंक
गळवा वडे थतां संचारथी (12) (slight movement due to gulping of cough)



सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं-
सूक्ष्म पणे, जराक द्रष्टिना संचारथी
(13) (little movement Of the eyes)



एवमाईएहिं -
ईत्यादि (तेर तथा बीजा पण)



आगारेहिं - आगारोथी, छूटोथी
अभग्गो - अभग्ग - भांगे नहीं

अविराहिओ - विराधना रहित,
अखंडित

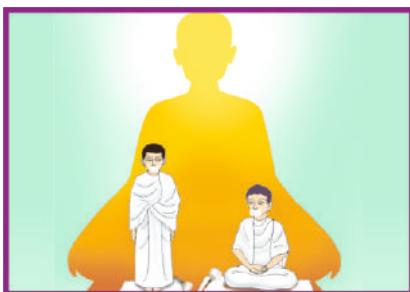


हुज्जमे - होजो मारो
काउस्सगो - कायोत्सर्ग
जाव - ज्यां सुधी
अरिहंताण - अरिहंत
भगवंताण - भगवंतोने
नमोक्कारेण - नमस्कार करीने
(प्रगटपणे नमो अरिहंताण बोलीने)



न पारेमि - न पारुं, (कायोत्सर्ग पूरो
न करुं)

ताव - त्यां सुधी (हुं),
कायं - कायाने (शरीरने)
ठाणेण - एक स्थाने स्थिर रहीने,
मोणेण - वचन द्वारा मौन रहीने,
झाणेण - शुभ ध्यानमां मननी
एकाग्रता करीने,
अप्पाण - आत्माने अर्थात्
चंचळ एवी मारी कायाने पापथी
वोसिरामि - वोसिरावुं छुं
(अलग करुं छुं, त्यागुं छुं).



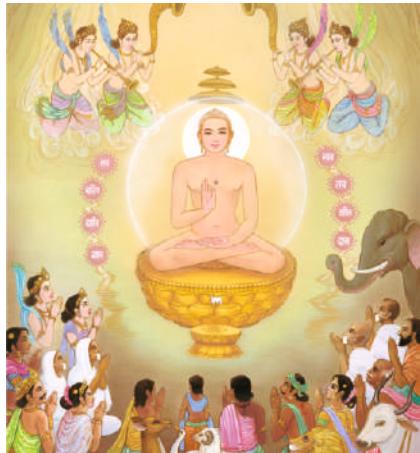
मैत्रीभावनुं पवित्र झरणुं,
मुज हैयामां वह्या करे;
शुभ थाओ आ सकळ विश्वनुं,
एवी भावना नित्य रहे.

गुणथी भरेला गुणीजन देखी,
हैयुं मारुं नृत्य करे;
ए संतोना चरणकमळमां,
मुज जीवननुं अर्घ्य रहे.



श्री नमस्कार मंत्र - समजण

- श्री नमस्कार महामंत्र एक वैश्विक (Universal) मंत्र छे. ए मंत्र नहीं पण महामंत्र छे.
- तेनी विशिष्टता ए छे के, तेमां कोइ व्यक्तिनुं नाम नथी. परंतु व्यक्तिए (आत्माए) प्राप्त करेलां गुणोनुं स्थान छे.
- ज्ञाति के संप्रदायना भेद वगर आत्मविकासनी यात्रामां आत्माए प्राप्त करेला गुणोने नमस्कार छे. आम, श्री नमस्कार महामंत्र व्यक्तिवाचक नहीं पण गुणवाचक छे.
- माटे विश्वना विद्वानो अने प्रबुद्ध प्राज्ञजनो तेने श्रेष्ठ मंत्र कही बिरदावे छे.
- जे श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट छे, मंगलकारी छे. तेने नमस्कार छे.
- श्री नमस्कार महामंत्रमां जे मंगल स्वरूप छे एँदेवा अरिहंत भगवंतो, सिद्ध भगवंतो, आचार्यजी, उपाध्यायजी अने साधु-साध्वीजीने भावपूर्वक नमस्कार करवामां आवे छे.
- अरिहंत भगवंत - अरि एटले शत्रु, हंत एटले हणनारा. आंतर शत्रुओने हणनारा, राग-द्वेषने जितनारा, चार घाती कर्मोनो क्षय करनारा छे.



- सिद्ध भगवंत - आठ कर्मोनो क्षय करी, सर्व कर्मोथी मुक्त थइ, जन्म-मरणनां चक्रथी मुक्त थईने शाश्वत काल सिद्धक्षेत्र पर बिराजमान छे.
- आचार्यजी - पंचाचारनुं पालन करनारा अने करावनारा, श्री संघनुं सफल संचालन, नेतृत्व करनारा छे.
- उपाध्यायजी - श्री आगमसूत्रोनुं, शास्त्रोनुं अध्ययन (अभ्यास) करनारा अने करावनारा छे.
- साधु-साध्वीजी - पंच महाव्रतोनुं पालन करनारा, प्रभु आज्ञामय संयम जीवन जीवनारा छे.

आ पांच पद आपणा माटे परम ईष्ट एटले के परम कल्याणकारी होवाथी तेओं पंच परमेष्ठी कहेवाय छे.

श्री नमस्कार महामंत्रनो प्रथम शब्द नमो छे. जे विनय सूचक छे. विनयपूर्वक पंच परमेष्ठीने करेला नमस्कार, सर्व पापोनो नाश करनार छे.

पंच परमेष्ठीना गुणोः-



अिरहंत भगवानना गुण 12 छे.



आचार्यजीना गुण 36 छे.



उपाध्यायजीना गुण 25 छे.



साधु-साध्वीजीना गुण 27 छे.

◆◆◆ श्री नमस्कार मंत्र स्मरणना लाभ... ◆◆◆

1. नमस्कार मंत्रना स्मरणथी आदेय नाम कर्मनो बंध थाय छे. तेनाथी आपणुं वचन सर्वमान्य बने छे.
 2. सर्वविध्नो, आपत्तिओ, कष्टो दूर थाय छे.
 3. नग्रता, विनय जेवा गुण प्रगटे छे.
 4. अहंकार, स्वच्छंद बुद्धि आदि दोषोनो नाश थाय छे.
 5. आपणी गुणग्राही दृष्टिनो विकास थाय छे.
 6. अरिहंतना ध्याने अरिहंत बनी जईए. जेना शरणे जइए तेना जेवा थईए. आपणे पण आपणा कर्मोनो क्षय करी परमात्मा बनी शकीए.
- आ कथनने वैज्ञानिक रीते समजीए.

LAW OF MATERIAL ना नियम प्रमाणे ज्यारे हुं सर्वोत्तम गुणवाळा आत्मानुं स्मरण करुं छुं. तेमने वंदन अने नमन करुं छुं, त्यारे, उत्तम तत्त्वने मारामां attract करुं छुं. जे मारुं कल्याण तो करे ज छे. साथे-साथे मारामां उत्तम गुणोने प्राप्त करवानी क्षमता विकसावे छे. ज्यां गुणोनो विकास होय त्यां पापोनो नाश होय ज.

खूब भावपूर्वक, लयबद्ध रीते मंत्रोना उच्चारण, मंत्रगान थकी पवित्र अने शक्तिशाळी स्पंदनो (vibrations) वातावरणमां प्रसरे छे. जे खूब ज लाभदायी अने फळदायी छे. विज्ञान पण कहे छे के, उच्चारेला शब्दोना तरंगो living अने non-living बनेने असर (effect) करे छे अने अशुभ तत्त्वनो नाश थाय छे.

- श्री नमस्कार महामंत्रनुं स्मरण कयारे-कयारे थई शके?
कोईपण समये अने कोईपण स्थळे गणी शकाय छे. उठतां - बेसतां,

चालतां-चालतां, सूतां-सूतां, भोजन करतां, तेमज कोईपण कार्य करतां
मनमां स्मरण करी शकाय छे. घरनी बहार जतां अने पाछा घरे प्रवेश करतां,
officeमां प्रवेश करतां अने office बंध करतां, स्कूल-कोलेजमां जतां
आवतां, वांचन-लेखन शरू करतां पहेलां, परीक्षा आपवा जतां, कोईपण
शुभ कार्यनी शरूआत करतां पहेलां, तेमज ज्यारे-ज्यारे समय मळे त्यारे
नमस्कार मंत्रनुं स्मरण करवुं श्रेष्ठ छे.

महामंत्र श्री नमस्कार, करुं स्मरण वारंवार...

मंगलमय छे श्री नवकार, उतारे भवपार...

रटण करुं दिनरात, देव-गुरु मारा प्राण...

विसरुं नहीं क्षणवार, महामंत्र श्री नमस्कार



अपेक्षित प्रश्ने

- प्रश्न - 1. पंचपरमेष्ठीना गुण केटलां छे?
- प्रश्न - 2. अरिहंत कोने कहेवाय?
- प्रश्न - 3. नमस्कार मंत्रना स्मरणथी शुंलाभ थाय?
- प्रश्न - 4. ‘नमो’ शब्द शेनो सूचक छे?
- प्रश्न - 5. नामस्मरणथी गुणोनी प्रासि केवी रीते थाय छे?

गुरुवंदन सूत्र - समजण

सामायिकनो बीजो पाठ गुरुवंदन सूत्र एटले केतिक्खुत्तोनो छे.

तिक्खुत्तोना पाठ द्वारा गुरुने वंदना कराय छे. तेथी, आ पाठनुं बीजुं नाम गुरुवंदन सूत्र छे.

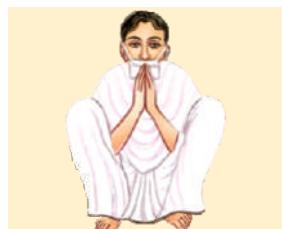
वंदनाना त्रण प्रकार छे :

(1) जघन्य वंदना - रस्तामां संत-सतीजी मळी जाय अथवा उपाश्रयमां तेओ कोई अगत्यनुं कार्य करी रह्या होय, त्यारे बे हाथ जोडी मस्तक नमावी "मत्थएण वंदामि" कही दूरथी मौन पणे नमस्कार करवा.

(2) मध्यम वंदना - तिक्खुत्तोना पाठ द्वारा त्रण वार वंदना करवी. गुरुदेव centreमां बिराजमान होय त्यारे त्रण प्रदक्षिणापूर्वक विनय भावथी वंदना करवानी छे. कारण के, गुरु आपणा परम उपकारी छे.

गुरु सामे बिराजमान होय त्यारे खूब उल्लासथी विधिपूर्वक त्रण आवर्तनपूर्वक (जे प्रदक्षिणाना प्रतीक रूपे छे.) त्रण वार वंदना करवानी होय छे. गुरुना सम्यकज्ञान, सम्यकदर्शन अने सम्यकचारित्र ए त्रणेय गुणोने वंदना करवाथी आपणामां पण तेवा गुण प्रगटे तेवा भाव साथे वंदना करवानी छे. बे हाथ, बे पग अने मस्तक नमावीने (पंचांग प्रणिपात) वंदना कराय छे.

(3) उत्कृष्ट वंदना - प्रतिक्रमणना त्रीजा पाठ द्वारा गोदुहिका आसनमां (गायने दोहता होय तेवुं आसन) बेसीने आवंदना कराय छे.



- गुरुने वंदन शा माटे करवामां आवे छे?

मारा आत्मानु कल्याण थाय, तेवी हितचिंता करनारा गुरु आपणने सत्यनी समजण आपे छे, मार्गदर्शन आपे छे, वारंवार प्रेरणा करे छे तेथी उपकारी गुरुने वंदन करवामां आवे छे.

मारा आवा कल्याणमित्र गुरुने हुं शुं अर्पण करु...? एवा भाव साथे वंदन करवामां आवे छे.

अहो! अहो! उपकारी गुरुवर हुं आपने वंदन करु छुं, नमन करु छुं, आपनो वारंवार सत्कार करु छुं. अनेक-अनेक प्रकारे सन्मान करु छुं. हृदयना आवा उत्तम भावो प्रगट करवा वंदना कराय छे.

भावपूर्वक गुरुवरनु स्वागत करवुं, ‘पधारो-पधारो’ जेवा शब्दो बोलीने आवकारवा ते सत्कार छे अने आसनादि अनुकूळ वस्तुओ माटे आमंत्रित करवा ते सन्मान छे.

गद् गद् हैये, अश्रुभीनी आंखे गुरुने वंदन करता मारु समग्र अस्तित्व गुरु चरणे झूळी जाय छे, हे गुरुदेव! आप मारा माटे कल्याण स्वरूप छो, मंगल स्वरूप छो... आवा भावो साथे वंदना करवानी छे.

वंदना करवाना अगणित लाभ

1. उच्च गोत्र कर्मनो बंध थाय छे. नीच गोत्रकर्मनो क्षय थाय छे.
2. उत्तम जाति, उत्तम कुळ, उत्तम बळ, उत्तम ऐश्वर्य वगोरे उत्तमोत्तम वस्तुओनी प्राप्ति थाय छे.
3. वंदना अहंकारनी वृत्ति घटाडवानी process छे. वंदनाथी ego घटे छे.
4. नप्रता अने विनय जेवा गुणोनी प्राप्ति थाय छे.
5. शरणागति अने समर्पणना भाव प्रगटे छे.

योगनी द्रष्टिए उत्तम आसन छे. जेना अनेक लाभ मळे छे.

- (1) करोडरज्जु flexible बने छे.
- (2) मस्तक जमीनने स्पर्शे त्यारे मगज अने हदयने बल प्राप्त थाय छे.
- (3) कपाळनी मध्यमां रहेल आज्ञाचक्र जमीनने स्पर्शे छे. तेथी, आज्ञाचक्र active अने balance थाय छे जेना कारणे शक्तिनो विकास थाय छे.



हे गुरुवर!

में तो पकडी आंगळी तारी, हवे जवाबदारी तारी.

में तो मस्तक झूकाव्युं जरी, हवे जवाबदारी तारी.

में तो आज्ञा हैये घरी, हवे जवाबदारी तारी.



अपेक्षित प्रश्ने

प्रश्न - 1. तिक्खुतो सूत्रनुं बीजुं नाम शुं छे? केम?

प्रश्न - 2. वंदनाना केटला प्रकार छे?

प्रश्न - 3. वंदना करवाना लाभ विषे जणावो (कोई पण त्रण)

प्रश्न - 4. जघन्य वंदना क्यारे कराय छे?

प्रश्न - 5. गुरु centerमां (मध्यमां) बिराजमान होय त्यारे वंदना केवी रीते कराय?

ईरियावहियं सूत्र - समजण

सामायिकनो त्रीजो पाठ ईरियावहियं सूत्र छे.

सामान्य रीते दरेक पाठ/सूत्र तेना पहेला शब्द द्वारा ओळखाय छे.

ईरियावहियं सूत्र द्वारा रस्ते आवतां, जतां, चालता, दैनिक कार्यों करतां-करतां आपणा द्वारा नाना-मोटा, एकेन्द्रियथी लई पंचेन्द्रिय जीवोनी हिंसा थई होय, तेओने दुःख पहोंचाडयुं होय तो तेनी आलोचना करी क्षमा मांगवानी होय छे. माटे, आ सूत्रनुं बीजुं नाम आलोचना सूत्र छे.

1. एकेन्द्रिय - जे जीवोने मात्र काया ज होय एटले के स्पर्शेन्द्रिय ज होय, तेने एकेन्द्रिय कहे छे. जेम के, पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु अने वनस्पति.
2. बेर्इन्द्रिय - जे जीवोने काया अने जीभ एटले के स्पर्शेन्द्रिय अने रसेन्द्रिय आ बे ईन्द्रिय होय तेने बेर्इन्द्रिय कहे छे. जेम के, ईयळ, अळसिया, कृमि वगेरे.
3. तेर्इन्द्रिय - जे जीवोने काया, जीभ अने नाक एटले के स्पर्शेन्द्रिय, रसेन्द्रिय अने ग्राणेन्द्रिय आ त्रण ईन्द्रिय होय तेने तेर्इन्द्रिय कहे छे. जेम के, कीडी, मंकोडा, धनेडां, जू, लीख वगेरे.
4. चौरेन्द्रिय - जे जीवोने काया, जीभ, नाक अने आंख एटले के स्पर्शेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, ग्राणेन्द्रिय अने चक्षुन्द्रिय आ चार ईन्द्रिय होय तेने चौरेन्द्रिय कहे छे. जेम के, माखी, मच्छर, पतंगिया वगेरे.
5. पंचेन्द्रिय - जे जीवोने काया, जीभ, नाक, आंख अने कान एटले के स्पर्शेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, ग्राणेन्द्रिय, चक्षुन्द्रिय अने श्रोतेन्द्रिय आ पांच ईन्द्रिय होय तेने पंचेन्द्रिय कहे छे. जेम के, नारकी, देवता, मनुष्य अने तिर्यच पंचेन्द्रिय पशु-पक्षी वगेरे.

आपणा जीवनमां आ पाठनुं महत्व

ईरियावहियं सूत्रना अभ्यासथी अने समजण थकी कोईपण कार्य आपणे ध्यानपूर्वक अने सावचेत बनीने करीए छीए. जेथी आपणी विचार सृष्टि, कार्यपद्धति अने जीवनशैली (life style) मां बदलाव आवे छे.

मारा कार्य थकी कोई जीवने पीडा तो नहीं थाय ने? दुःख तो नहीं पहोंचे ने? एवी जागृति अने संवेदना आपणा हृदयने कोमळ अने करुणामय बनावे छे.

ईरियावहियं सूत्रमां जीवोनी विराधना के हिंसा केवी रीते थाय छे, एनी समजण आपी छे. जीव मरी जाय त्यारे ज हिंसानो दोष लागे तेम नथी परंतु, तेने कोई पण प्रकारे दुःखी करीए, अपमान के तिरस्कार करीए तो, ते पण एक प्रकारनी हिंसा ज छे. ते "अभिहया" थी लईने "जीवियाओ ववरोविया" सुधीनी दस प्रकारनी विराधनाथी समजाव्युं छे.

जैन दर्शन केवुं अद्भूत छे! तेमां, केवी सूक्ष्म विचारणा करी छे! तेनो ख्याल आवे छे. आपणे विराधनाना एक-एक शब्दने ध्यानपूर्वक वागोळीशुं अने समजीशुं. डगले ने पगले याद राखीशुं. तो अनेको अनेक पापोथी बची शकीशुं.

केवी विचारणा करीशं

एक Truckमां 10 गाय रही शके तेटली जायामां 30/40 गाय भरवामां आवे छे. ते दृश्य जोईने आपणने अरेराटी थई जाय छे!!! तेवी ज रीते ज्यारे बटाणाने ठांसी-ठांसीने Plastic bagमां भरीने Fridgeमां मूकीए छीए त्यारे ते जीवोने पण दर्द थतुं ज हशे, त्यारे मारा द्वारा 'संघाईया' नामनी विराधना

थाय छे. एवी विचारणा करवी.

खूब कीडीओ थई गई होय तेना पर powder छांटीए त्यारे ते मूँझाई जाय छे, डरी जाय छे आमथी तेम दोडवा लागे छे. भयथी विहळ बनी जाय छे त्यारे ‘वत्तिया’नो दोष लागे छे. मारे आवुं न कराय. कोमळताथी पूँजणी द्वारा तेने कोईक स्थानमां मूकी देवाय. एवी विचारणा करवी.

भिखारीने तिरस्कारपूर्वक काढी मूकीए त्यारे ‘अभिह्या’नो दोष लागे छे एवुं मारे न कराय. एवी विचारणा करवी.

आ रीते आपणे आपणा दैनिक कार्यो करती वखते विचारणा करीशुं. दरेक कार्य, रोजिंदी क्रियाओ कोमळताथी, जयणाथी, जीवो प्रत्ये मैत्री भावथी करीशुं, जीवोनी विराधना थई गई होय तो तेनी आलोचना द्वारा, प्रायश्चित द्वारा क्षमा मांगीशुं अने अनंत कर्म निर्जरा द्वारा आत्माने शुद्ध-विशुद्ध बनावीशुं.



आपणे आटलुं तो चोककस करीशुं

- (1) घास पर चालशुं नहीं.
- (2) फूल-पांदडा तोडशुं नहीं.
- (3) ओछामां ओछुं पाणी केम वपराय, ते विषे विचारणा करी अमलमां मूकीशुं.
- (4) गेस, T.V., Mobile, Light, पंखा, A.C. नो उपयोग



- बने तेटलो ओछो करीशुं, घटाडवानो प्रयास करीशुं.
- (5) कोई पण वस्तु लेता-मूकता ध्यान राखीशुं. कोई नाना-नाना जीव जंतु तो नथी ने? तेनी काळजी अने जतना करीशुं.
 - (6) चंपल-बूट पहेरतां अने उतारीने मूकता बराबर जोईने पहेरशुं अने मूकशुं.
 - (7) गाडी, Scooter, cycle चलावतां पहेला बराबर आजु-बाजु चेक करीशुं के कोई जीवनी विराधना तो थती नथी ने... पछी ज चलावशुं.
 - (8) कोईनुं अपमान के तिरस्कार करशुं नहीं.
 - (9) कोईनी प्रगतिमां बाधक बनशुं नहीं.
 - (10) बे व्यक्ति वच्चे कलेश-कंकास थाय तेवो व्यवहार करशुं नहीं.



मारुं जीवन केवुं? कोईने पीडा न थाय तेवुं.
ज्यारे-ज्यारे तमे चालो जी, नाना-नाना जीवोनी रक्षा करो जी.



अपेक्षित प्रश्ने

- प्रश्न - 1. त्रीजा पाठने आलोचना सूत्र केम कहेवाय छे?
- प्रश्न - 2. ओछुं पाणी वपराय ते माटे तमे शुं प्रयत्न करशो? ते विस्तारथी जणावो.
- प्रश्न - 3. तेईन्द्रिय कोने कहेवाय?
- प्रश्न - 4. गाडी चलावता पहेला शुं करवुं जोईए?
- प्रश्न - 5. विराधनाना केटला प्रकार छे अने क्या-क्या?

તस्स उत्तरी सूत्र - समजण

सामायिकनो चोथो पाठ तस्स उत्तरी सूत्र छे.

आत्मानी विशेष शुद्धि करवा माटेनुं आ सूत्र छे.

कायोत्सर्गनी साधना शरू करता पहेलानी पूर्व तैयारी रूपे आ सूत्र छे.

आ पाठमां कायोत्सर्गनुं प्रयोजन समजाव्युं छे.

कायोत्सर्गनुं प्रयोजन :

1. ईरियावाहियंना पाठथी आलोचना कर्या पछी जे पापदोष रही गया होय तेनी विशेष शुद्धि माटे,
2. पापनुं प्रायश्चित्त करवा माटे,
3. आत्माने शुद्ध बनाववा माटे,
4. आत्माने शल्य रहित बनाववा माटे,
5. 18 पापस्थान अने 8 कर्मोनो नाश करवा माटे कायोत्सर्ग कराय छे.



शल्य एटले कांटो

रस्ते चालता पगमां कांटो वागी जाय, पगमां कांटो खूंची जाय ते पछी चालवुं मुश्केल थई जाय छे. अत्यंत दुःखदायी अने पीडाकारी बनी जाय छे. ते जरीते शल्यो आपणा आत्माने पीडादायी छे.

आत्मशल्यो त्रण प्रकारनां छे :-

- (1) माया शल्य - माया करवी, कपट राखवुं.
- (2) निदान शल्य - धर्मक्रिया करीने तेनुं फळ मांगी लेवुं.
- (3) मिथ्यात्व शल्य - खोटी समजण.

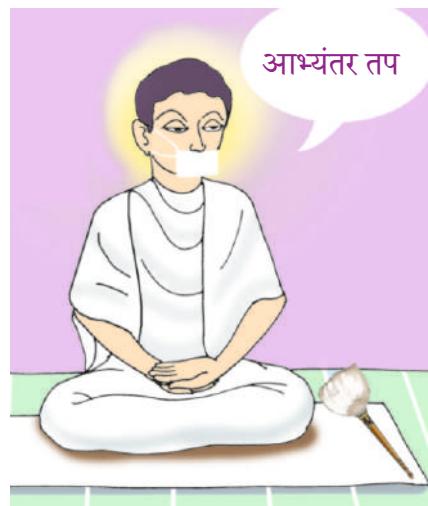
कायोत्सर्ग कई रीते कराय?

कायोत्सर्गमां शरीरने स्थिर करी, वाणीने विराम आपी, मौन पणे ध्यान करवानुं छे.

कायोत्सर्गमां 13 प्रकारना आगार एट्ले के छूट होय छे. जेनाथी कायोत्सर्ग भंग थतो नथी. कारण के, ते शरीरनी स्वयं संचालित तेमज नैसर्गिक स्वाभाविक प्रक्रियाओ छे. जेम के, श्वास लेवो, श्वास छोडवो, ऊघरस, छींक, बगासुं खावुं तेमज शरीरनुं सूक्ष्म हलन चलन थवुं वगैरे क्रियाओने आपणे रोकी शक्ता नथी. तेथी "ऊससिएणं"थी लईने "सुहुमेहिं दिड्हिसंचालेहिं" सुधीना 13 आगार- छूट आपेली छे.

कायोत्सर्ग करवाना अनेक लाभ

- (1) नियमित रीते कायोत्सर्ग करवाथी मन शांत बने छे.
- (2) व्यक्ति कोई पण situation ल्लो शांतिथी स्वीकार करे छे. Reaction आपवाने बदले समजवानो प्रयत्न करे छे.
- (3) जेने कारणे सहनशक्ति तेम ज समजशक्ति अने आंतरप्रज्ञानो विकास थाय छे.
- (4) नवा कर्मो बंधाता नथी.
- (5) मन उपर control रहेवाथी मनःशक्तिनो श्रेष्ठ उपयोग थई शके छे.
- (6) कायोत्सर्ग ए आभ्यंतर तप छे. तेथी तपसाधना थाय छे.



- (7) काउसग द्वारा कर्म निर्जरा थाय छे.
- (8) शारीरिक अने मानसिक स्तरे अत्यंत स्वास्थ्यप्रद अने लाभप्रद छे.
- (9) आध्यात्मिक क्षेत्रे आंतर-चेतना जागृत थाय छे.
- (10) स्व द्वारा स्वने पामवानी process छे.
- (11) दरेक धर्म ध्यानने प्राधान्य आपे छे. परंतु, जैनदर्शननी विशेषता ए छे के, आत्मशुद्धिना लक्ष्यने सिद्ध करवा कायोत्सर्गनी विलक्षण क्रिया पण बताववामां आवी छे.

(Tune - कोईने काई न कहेवुं / चांद आहे भरेगा)

कोई ईच्छा न होजो, कोई आग्रह न रहेजो,
 मोहने छोड रे मनवा! माया ममता न रहेजो,
 पगमां खूचे जो कांटो, दर्द थाये छे भारी
 शल्यो छे कांटा जेवा, अतिशय पीडाकारी
 आत्मशुद्धिने वरवा, गुरुनी संगे रहेजो... मोहने...



अपेक्षितप्रश्ने

- प्रश्न - 1. शल्य एटले शुं? एना प्रकार जणावो.
- प्रश्न - 2. आगार एटले शुं? आगार केटला छे?
- प्रश्न - 3. कायोत्सर्गनुं प्रयोजन शुं छे?
- प्रश्न - 4. कायोत्सर्गमां कई प्रतिज्ञा लेवानी होय छे?
- प्रश्न - 5. कायोत्सर्गकरवाथी थता लाभ विषे जणावो. कोई पण त्रण.

प्रभुनाम स्मरणनो महिमा तथा

चोर्वीस भगवानना नाम

सत्य मार्गनी समजण आपनार चोर्वीस तीर्थकर प्रभु आपणा परम उपकारी छे. चोर्वीस भगवाननुं नामस्मरण करवाथी अनंता कर्मोनो क्षय थाय छे, अनंतु पुण्य बंधाय छे, संसारनी दरेक पीडा- दुःख उपाधिने दूर करवानी तथा आपणामां सत्य समज प्रगटावानी अद्भूत शक्ति तेमना नामस्मरणमां रहेली छे.

|| चउव्वीसत्थएण भंते ! जीवे किं जणयइ ? ||

|| चउव्वीसत्थएण दंसणंविसोहिं जणयइ ! ||

चतुर्विंशति स्तवननो पाठ करवाथी दर्शननी विशुद्धि थाय छे, जिनेश्वरोना नाम स्मरणथी सम्यकदर्शनमां बाधा उत्पन्न करनार कर्मो दूर थाय छे. कारण के तीर्थकरोनी स्तुति के गुणगान श्रद्धा अने भक्तिथी ज थाय छे. तेथी स्तुति करनार जीवनुं सम्यक् त्व निर्मळ थाय छे अने श्रद्धा द्रढीभूत थाय छे.

माटे रोज चोर्वीसे भगवाननुं नामस्मरण अवश्य करवुं जोइए. ते आपणा हित, श्रेय अने कल्याणनुं कारण बने छे.

भजीए नित्य भगवानना नाम, करीए सदाय भगवानना काम,

पामीए सदाय सुख शांतिने आराम

चोवीस तीर्थकर प्रभु संपूर्ण विश्वमां सर्वश्रेष्ठ-सर्वोत्तम पुण्यना धारक होय छे. देव, मनुष्यो सहित चारे गतिना जीवो तेमने वंदन करतां होय छे. तीर्थकर प्रभु विश्वमां जीवमात्रना परम उपकारी होय छे. तेओ संपूर्ण ज्ञानना धारक होवाने कारणे सर्वथा सत्य धर्म बतावी शके छे. आवा परम उपकारी भगवंतनुं नामस्मरण तो आपणे नित्य करवानुं ज छे. पण साथे-साथे आपणा आत्मश्रेय अर्थे तेओए जे मार्ग बताव्यो छे, जे आज्ञाओ करी छे तेनुं पालन पण यथाशक्ति चोकक्स करवुं ज जोइए.

चोवीस तीर्थकर भगवानना नाम



1. श्री कृष्णभद्रेश्वर स्वामी
2. श्री अजितनाथ स्वामी
3. श्री संभवनाथ स्वामी
4. श्री अभिनन्दन स्वामी
5. श्री सुमतिनाथ स्वामी
6. श्री पद्मप्रभ स्वामी
7. श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी
8. श्री चंद्रप्रभ स्वामी
9. श्री सुविधिनाथ स्वामी
10. श्री शीतलनाथ स्वामी
11. श्री श्रेयांसनाथ स्वामी
12. श्री वासुपूज्य स्वामी

13. श्री विमलनाथ स्वामी
14. श्री अनंतनाथ स्वामी
15. श्री धर्मनाथ स्वामी
16. श्री शांतिनाथ स्वामी
17. श्री कुंथुनाथ स्वामी
18. श्री अरनाथ स्वामी
19. श्री मल्लिनाथ स्वामी
20. श्री मुनिसुव्रत स्वामी
21. श्री नमिनाथ स्वामी
22. श्री नेमनाथ स्वामी
23. श्री पार्श्वनाथ स्वामी
24. श्री महावीर स्वामी.



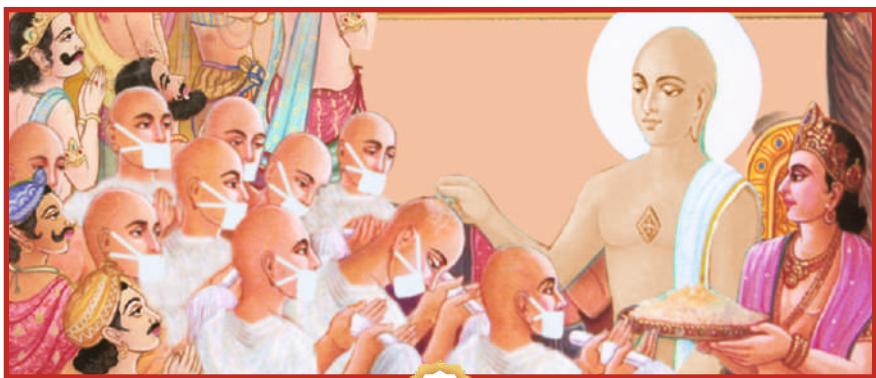
गणधर भगवंत

तीर्थकर पद पछीनुं बीजा नंबरनुं सर्वश्रेष्ठ पद गणधर छे. गणधर तीर्थकर परमात्माना मुख्य शिष्य होय छे. तीर्थकर परमात्मानी प्रथम देशनामां "उपन्नैऽवा, विगमैऽवा अने धुवैऽवा" आ त्रिपदी (त्रण शब्दो) सांभळीने जेमने चौदपूर्व सहित बार अंगसूत्रनुं ज्ञान थई जाय तेमने, परमात्मा गणधरनी पदवी प्रदान करे छे. भगवान महावीरनी देशनामां 11 व्यक्तिओने बार अंगसूत्रनुं ज्ञान थई गयुं तेथी भगवान महावीरनां 11 गणधर थया छे. परमात्माना उपदेशने गणधरो सूत्ररूपे गूँथे छे. परमात्मानी परम कल्याणकारी वाणी गणधरोना माध्यमर्थी आपणा सुधी पहोंचे छे. तेथी गणधरो आपणा अनंत उपकारी छे. तेमना पावनकारी नामनुं आपणे नित्य स्मरण करवुं जोईए.

वर्तमाने जेमनुं शासन प्रवर्तमान छे एवा आपणा चरम तीर्थकर प्रभु महावीरना 11 गणधरो थयां. तेओना नाम आ प्रमाणे छे.

महावीर स्वामीना 11 गणधरोनां नाम

- | | | | |
|---------------|-------------------|--------------|-------------|
| 1. इन्द्रभूति | 4. व्यक्तजी | 7. अकंपितजी | 10. मेतार्य |
| 2. अग्निभूति | 5. सुधर्मा स्वामी | 8. मंडितजी | 11. प्रभास |
| 3. वायुभूति | 6. मौर्यपुत्र | 9. अचलभ्राता | |



16 सति

शील ज जेनुं आभूषण छे, तेने सति कहे छे. सति एटले शीलवंती स्त्री. जे स्त्रीओए पोतानी खुमारीथी अनेक कष्टो सहन करीने पोताना शील-चारित्री रक्षा करी होय, तेवी स्त्रीओने सति कहे छे. शील संपन्न व्यक्तिमां एक प्रकारनी शक्ति होय छे. तेमना नाम स्मरणथी आपणने पण शील-सदाचारनी प्रेरणा मळे छे. तेथी रोज सवारे आवा पुण्यवान व्यक्तिओना नामस्मरणनी परंपरा वर्षोंथी चाली आवी छे.



16 सतिओना नाम

- | | | | |
|-------------|------------|--------------|---------------|
| 1. बाह्णी | 5. द्रौपदी | 9. सीता | 13. सुभद्रा |
| 2. सुंदरी | 6. कौशल्या | 10. दमयंती | 14. पुष्पचूला |
| 3. चंदनबाला | 7. मृगावती | 11. शिवादेवी | 15. प्रभावती |
| 4. राजेमति | 8. सुलसा | 12. कुंता | 16. पद्मावती |

आठ कर्म

जीव स्वने विसरी, परमां भळी, राग-द्वेष करी अनंता कर्मो बांधे छे. ते कर्मोने विशेषरूपे समजवा अर्थे श्री भगवंते तेने आठ विभागोमां विभाजीत कर्या छे. ते आ प्रमाणे...

1. ज्ञानावरणीय कर्म - आत्माना ज्ञानगुण पर आवरण करे छे.
2. दर्शनावरणीय कर्म - आत्माना दर्शनगुण पर आवरण करे छे.

- 3. वेदनीय कर्म - भौतिक सुख-दुःखनो अनुभव करावे छे.
- 4. मोहनीय कर्म - सत्यथी विमुख करे छे, मूढ बनावी दे छे,
- 5. आयुष्य कर्म - ते, ते भवमां रहेवानी काळ मर्यादा निश्चित करे छे.
- 6. नाम कर्म - अरूपी आत्माने देव, मनुष्य, नारकी आदी विविध रूप धारण करावे छे.
- 7. गोत्र कर्म - आत्माने श्रेष्ठ के निम्न कक्षानी प्रशंसा के प्रतिष्ठाने प्राप्त करावे छे.
- 8. अंतराय कर्म - आत्मानी दान, लाभ आदी अनंत शक्तिओने प्रगटन थवादे.

छकाय

संसारी जीवोमां कर्मोना कारणे अनंत प्रकारनी विविधता छे.

ते जीवोने श्री भगवंते 6 प्रकारमां विभाजीत कर्या छे.

काय - समूह.

6 प्रकारना जीवोनां समूहने छकाय कहे छे.

ते आप्रमाणे...

1. पृथ्वीकाय (माटी)
2. अपकाय (पाणी)
3. तेउकाय (अग्नि)
4. वायुकाय (हवा)
5. वनस्पतिकाय (झाड, पान)
6. त्रसकाय (हालतां-चालतां जीवो)



દ્રવ્ય

સંપૂર્ણ 14 રાજલોકમાં જેમનું અસ્તિત્વ છે. જેઓ સદાકાળ શાશ્વત છે. તે દ્રવ્ય કહેવાય છે. તે 6 છે. આ 6 દ્રવ્ય સિવાય વિશ્વમાં અન્ય કર્ફી જ નથી.

- | | |
|------------------|---|
| 1. ધર્માસ્તિકાય | - જે જીવ અને પુરુષને ગતિ કરવામાં સહાય કરે. |
| 2. અધર્માસ્તિકાય | - જે જીવ અને પુરુષને સ્થિર થવામાં સહાય કરે. |
| 3. આકાશાસ્તિકાય | - જે જીવ અને પુરુષને જગ્યા આપે. |
| 4. જીવાસ્તિકાય | - આત્મદ્રવ્ય. |
| 5. પુરુષાસ્તિકાય | - વર્ણ, ગંધ, રસ, સ્પર્શયુક્ત પદાર્થ. |
| 6. કાળ | - સમય. |

ઉપકરણ

સામાયિકની સાધનામાં સંસારના સાધનનોને છોડીને ધાર્મિક સાધનોનો સ્વીકાર કરવામાં આવે છે, તે સાધનનોને ઉપકરણ કહેવાય છે. આપણા આત્માને પાપથી જે બચાવે, કર્મોના ક્ષય કરાવે અને મોક્ષમાર્ગ પર અગ્રેસર કરે તેવા સાધનોને ઉપકરણ કહેવાય છે.

તે ઉપકરણો આ પ્રમાણે છે...

1) ગુચ્છો અને રજોહરણ

“જીવ દયાનું ઉપકરણ,
શુદ્ધ કરે મારું અંત:કરણ,
દેવોને પણ દુર્લભ છે,
એવું અમૂલ્ય છે આ ઉપકરણ”



- ગુચ્છો અને રજોહરણ એ જીવ દ્યાનું પ્રતીક છે. જે આપણામાં દ્યા અને કરુણાના ગુણને પ્રગટ કરે છે.
- દેવતાઓ પાસે અદળક સંપત્તિ હોવા છતાં પણ તેઓ આ ઉપકરણોને પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી. એટલે દેવલોકના દેવોને પણ દુર્લભ છે તેવા આ ઉપકરણો છે.
- ગુચ્છો અને રજોહરણ મૂલાયમ એવી ઊનથી બનાવવામાં આવે છે.
- સાધુના રજોહરણ પર કપડું બાંધવામાં આવે છે.
- શ્રાવકના ગુચ્છા અને રજોહરણની લાકડી પર કપડું વીટેલું નથી.

૨) મુહપત્તી

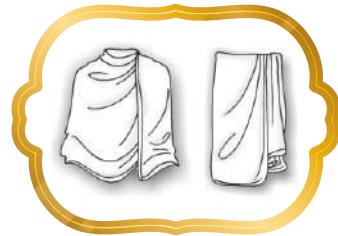
"જનતાની જ્યોતિ પ્રગટાવે,
તેવું છે આ ઉપકરણ,
સુક્ષમ જીવોની રક્ષા કરતું,
અમૂલ્ય છે આ ઉપકરણ"



- મુખવસ્ત્રિકા જૈન ધર્મનું મુખ્ય ચિન્હ છે.
- તે સફેદ રંગની હોય છે.
- તે 21 આંગળી લાંબી, 16 આંગળી પહોળી અને 8 પડવાળી હોય છે.
- તેને દોરા વડે મોઢા પર બાંધવામાં આવે છે.
- મોઢા પર મુહપત્તી બાંધવાથી વાયુકાયના અને બીજા સૂક્ષ્મ જીવોની રક્ષા થાય છે.
- સૂક્ષ્મ જીવોની રક્ષાના ભાવ સાથે આપણામાં પણ કરુણાના ગુણ પ્રગટ થાય છે.
- પ્રભુની આજ્ઞાનું પાલન થાય છે.

3) पछेडी/खेस/चोलपट्टो

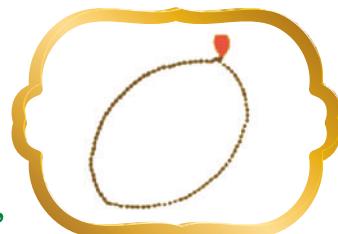
"छे बहु अणमूली,
प्रभुनी आपछेडी,
प्रभु जेवा बनवानी, छे आ सरळ सीढी"



- ज्यारे श्रावको सामायिक करे त्यारे पछेडी अने चोलपट्टो पहरे छे.
- श्वेत रंग शांतिनुं प्रतीक छे. ज्यारे श्वेत colour पहरीने सामायिक करवामां आवे त्यारे ते colourनी Positivity आपणा मन पर पण असर करे छे.
- प्रभु जे संयम मार्ग पर चाल्या, ते मार्ग पर आपणे अत्यारे चाली शकता नथी परंतु 48 मिनिट प्रभु जेवा वस्त्र परिधान करी आपणे एटला समय माटे प्रभु जेवा बनी शकीए छीए.
- आजे भावथी करेली साधना आवतीकालनी संभावना बनी जती होय छे. आजे थोडा समय माटे प्रभु जेवा बनीशुं तो आवतीकाले अवश्य आपणे पण परमात्मा बनी शकीशुं.
- ज्यारे आपणे प्रभुनो वेश पहर्यो होय त्यारे आपणाथी कोई अयोग्य कार्य थई शकतुं नथी. कारण के, एक human psychology होय अने तरत ज विचार आवे के प्रभुनी पछेडी पहरीने आवुं अयोग्य माराथी केम थाय? automatic आपणा अवगुणो, आपणी अनंतकाळनी वृत्तिओ घटवा लागे छे.

4) माळा

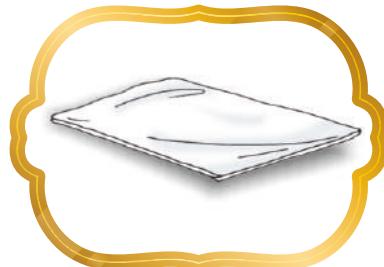
"भावथी प्रभु साथे,
करावे छे मारुं मिलन
माळा करता हंमेशा, प्रसन्न रहे छे मारुं मन"



- माळामां 108 पारा होय छे. जे पंच परमेष्ठीना गुणोनो सरवाळो होय छे.
- माळा मुख्यत्वे लाकडानी, रुद्राक्षनी होय छे.
- जे पदार्थ अवाहक होय तेनी माळा लाभदायक होय छे, कारण के, तेमां positive energy store रहेती होय छे. ज्यारे के, वाहक पदार्थमांथी पास थई जती होय छे.
- माळामां जे फूमतुं होय तेनी नीचेना सौथी मोटा पाराने मेर कहे छे.
- भावथी एकलीन थईने माला करवाथी कर्मनिर्जरा थाय छे.
- माळा करवाथी मन प्रसन्न रहे छे. प्रभु साथे ऐक्यता सर्जाय छे.
- स्वाध्याय तपनो लाभ मळे छे.

5) आसन

"जीवदयानी रक्षाकाजे,
उपकरण छे आसन.
आ आसन पर बिराजी,
जयवंतु राखुं जिनशासन"



- सामायिकमां बेसवा माटे जे आसननो उपयोग थाय छे तेने पाथरणुं कहे छे.
- सामान्य रीते ते ऊननुं बनेलुं होय छे. ऊन आपणा positive परमाणुने जमीनमां pass थवा देती नथी. साधना-आराधनाओथी प्रगट थयेली शुभ उर्जाओ आपणी अंदर ज रहे छे.
- आसन पर कोी नाना जीव आवी जाय तो ते सहेलाईथी ओळखीने दूर करी शकाय ते माटे पाथरणुं सफेद के light colour नुं होय छे.

6) धार्मिक पुस्तक

“प्रभुनी अगाध करुणा,
वरसे छे आगममां...
प्रभुनाते ज्ञानने, नित्य राखीये स्मरणमां”



- आजे आपणुं पुण्य एटलुं प्रबळ नथी के आपणे स्वयं परमात्माना दर्शन करी शकीए परंतु आपणे एटला पुण्यवान छीए के परमात्माना अक्षरदेहना दर्शन करी शकीए छीए.
- धार्मिक पुस्तको, ग्रंथो, आगमो आपणने सत्यनी समज आपे छे, सत्यनु दर्शन करावे छे.
- आपणे शुं करवुं जोईए अने शुं न करवुं जोईए, आपणा आत्मानुं हित शेमां समायेलुं छे ते दरेकनी समजण आपणने आ पुस्तको द्वारा मळी शके छे.
- जेम एक पिता बाळकने उजळा भविष्य माटे मार्गदर्शन आपे तेवी रीते आपणा परम पिता परमात्माए तेमना बाळकोना एटले के, आपणा आत्महित माटे जे मार्गदर्शन आप्युं ते आ पुस्तको द्वारा प्राप्त करी शकाय छे.
- दुनियानो अने आपणो कोई एवो प्रश्न के problem नथी जेनुं मार्गदर्शन आपणने आपणा आगमोमांथी न मळी शके. दरेकनुं समाधान आपणा धर्मग्रंथमां, आगमोमां समायेलुं छे.

7) ठवणी

“ज्ञाननो आदर करवानुं छे,
साधन आउपकरण
अक्षरदेह रूपी प्रभुने मळवानुं,
साथी छे आउपकरण”



- पुस्तकने राखवाना साधनने ठवणी कहे छे.
- सामान्य रीते ते लाकडानी होय छे.
- पुस्तक फाटे नहीं, बगडे नहीं माटे ठवणी राखवामां आवे छे.
- वांचता-वांचता आपणाथी पग अडी न जाय, अशातना न थाय, ज्ञानना साधनोनो आदर थाय माटे ठवणी पर पुस्तक राखवामां आवे छे.

अपेक्षित प्रश्ने

- प्रश्न - 1. आपणे यथाशक्ति शेनुं पालन करवानुं छे?
- प्रश्न - 2. गणधर भगवंतोना आपणा पर क्या उपकार छे?
- प्रश्न - 3. सती कोने कहेवामां आवे छे?
- प्रश्न - 4. छ काय एटले शुं?
- प्रश्न - 5. जीवने अनंता कर्मो बांधवा पाछळ शुं कारण छे?
- प्रश्न - 6. नव तत्व कोने कहेवाय छे?
- प्रश्न - 7. उपकरण एटले शुं?
- प्रश्न - 8. द्रव्य कोने कहेवाय?

विभाग - ३

संस्कार विभाग

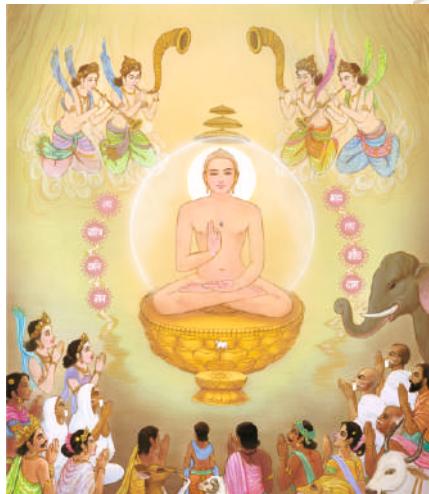
जय जिनेन्द्र

1) जय जिनेन्द्र शब्दनो अर्थ शुं?

जय + जिन + इन्द्र = जिनेन्द्र

जय - जयकार, जिन - जेओए राग
द्वेषने जीती लीधा छे एवा केवळी भगवंत,
इन्द्र - अधिपति, राजा.

जेमने राग द्वेषने जीती लीधा छे एवा
सामान्य केवळी पण जेमने अधिपति एटले
के इन्द्र माने छे एवा तीर्थकर प्रभुनो जय
जयकार हो.



2) जय जिनेन्द्र कोने-कोने कहेवाय?

जय जिनेन्द्र आपणाथी मोटाओने, आपणाथी नानाओने, आपणा
मित्रोने, आपणा सगा संबंधिओने सर्वेने कहेवाय. वडीलोने अने घरना दरेक
सभ्यने, कोईने phone करीए अने कोईनो phone आवे त्यारे, आपणा घरे
guest आवे त्यारे अने आपणे ज्यारे कोईना घरे जईए त्यारे भावथी जय
जिनेन्द्र कही वातनी शरूआत करवी जोईए.

पण रस्तामां तमने साधु – साध्वी मळे त्यारे एमने जय जिनेन्द्र कहेशो?
ना, तेमने तो बे हाथ जोडी, मस्तक नमावीने “मत्थएण वंदामि” कही सुख
शाता पूछीशुं.

3) जय जिनेन्द्र क्यारे कहेवाय?

सवारे उठतानी साथे ज मम्मी-पप्पा अने वडीलोने “जय जिनेन्द्र” कही दिवसनी शरूआत कराय. स्कूलमां जती वखते, घरनी बहार नीकळता समये, रस्तामां कोई पण मित्र, सगा, संबंधि मळे त्यारे अने रात्रे सूती वखते मम्मी, पप्पा, दादा, दादी, नाना, मोटा सौने “जय जिनेन्द्र” कहीने पछी ज सूवा जवाय.

4) जय जिनेन्द्र केवी रीते कहेवाय?

पहेला विनयपूर्वक मम्मी-पप्पा अने वडीलोनी आंखोमां आंखो मिलावीने, तेमनी सामे जोईने तेमनी आंखोमांथी नीकळता positive rays ने ग्रहण करीने पछी वांका वळीने तेमना जमणा पगना अंगुठाने स्पर्श करवानो. एम करवाथी वडीलोनो आशीर्वाद आपतो हाथ आपणा माथा पर मूकाशे.

5) रोज वडीलो - मम्मी - पप्पा ने आ रीते जय जिनेन्द्र कहेवाथी शुंथाय?

तेनाथी वडीलो - मम्मी - पप्पानी eyesमांथी नीकळता positive raysनी आपणने प्राप्ति थाय, जेनाथी आपणे कोई पण fieldमां क्यारेय पण fail न थईए.

वडीलोना positive vibrations सीधां आपणा मस्तकमांथी आपणा आखा शरीरमां फेलाइ जशे. जेनाथी आपणा विचारो पण positive थई जशे.

वडीलो - मम्मी - पप्पानी आंखो, जमणा पगनो अंगूठो अने हाथमां विशेष शक्ति रहेली छे. तेमांथी नीकळता विशेष Rays आपणी negativity दूर करे छे अने दरेक समये आपणुं रक्षण करे छे.

6) ભાવથી જય જિનેન્દ્ર કહેવાથી શું લાભ થાય?

આપણે એક જ વાર જય જિનેન્દ્ર બોલીએ તો એક સાથે જેટલા તીર્થકર પરમાત્માઓ થિડ ગયા છે તે બધાનો જય જયકાર થિડ જય છે.

- જિનેન્દ્ર ભગવંતનો જય જયકાર કરવાથી આપણને ભગવાન જેવા બનવાનું મન થાય છે. આવતા ભવમાં સર્વતીની પ્રાસિ થાય.
- નિદુર અને નિર્ભય બનાય.
- આપણી aura શુદ્ધ થાય.
- આપણને Positive Energy મળે.
- આપણા વિચારો શુદ્ધ થાય.
- Ego, anger જેવા દુર્ગુણ દૂર થાય. નપ્રતા અને સરળતા આવે.
- Will power અને Memory power વધે છે.
- Aura positive થર્ડ જાય, જેથી કોઈ સાથે fight ન થાય, સર્વત્ર positivity ફેલાઇ જાય અને success મળે.
- આપણા તીર્થકર પરમાત્મા પ્રતિ શ્રદ્ધા-ભક્તિભાવ વધે છે.



Did You Know ??

ભાવથી જય જિનેન્દ્ર કહેવાથી
આવતા ભવમાં જૈન ધર્મની
પ્રાસિ થાય તેવું “ભદ્ર પુણ્ય કર્મ”
બંધાય છે.

“ જય જિનેન્દ્ર જૈનત્વની ઓળખ છે. ”

SONG

Jai Jinendra to you, Jai jinendra to you
Family and friends, Family and friends
Jai Jinendra to you, Jai jinendra to you
Each and every one, Each and everyone

(Tune : When you are happy and you know it.)

When you wake up in the morning ... Say Jai Jinendra ...
Before sleeping at night ... Say Jai Jinendra
When you meet somebody . When you greet
somebody ...
You first have to ... Say Jai Jinendra ...
To be favourite of God ... Say Jai Jinendra ..
To be loved by all ... Say Jai Jinendra ..
For success and progress ... For peace and for rest ...
We all have to ... Say Jai Jinendra ...



આહાર વિવેક

આહાર વિવેક એટલે શું?

પોતાના ક્ષુધા વેદનીય (ભૂખ) ને શાંત કરવામાટે જીવ જે પણ કાર્બિ ગ્રહણ કરે છે તેને આહાર કહેવાય છે. આહાર કેવો લેવો, ક્યારે લેવો, કેટલો લેવો, કેવી રીતે લેવો તેની જાગૃતિ રાખવી એ આહાર વિવેક છે.



આહાર વિવેક શા માટે કરવો?

"સરીરમાહુ ણાવત્તિ" શરીર એ નાવ સમાન છે. આ શરીર દ્વારા જ સાધના થઈ શકે છે. સાધના માટે સ્વસ્થ શરીર જરૂરી છે. સ્વસ્થ શરીર માટે સુયોગ્ય આહાર જરૂરી છે. સમ્યક્ આહાર માટે આહારનો વિવેક જરૂરી છે. જો આહારનો વિવેક જળવાઈ રહે તો આહાર જ ઔષધ બની જાય છે અને જો આહારનો વિવેક જળવાઈ રહે તો આહાર જ ઔષધ બની જાય છે અને જો આહારનો વિવેક ન જળવાય તો આહાર જ રોગનું કારણ પણ બની જાય છે.

આહાર કેટલા પ્રકારના છે?

આહાર ત્રણ પ્રકારના છે.

1. ઓજ આહાર - જીવ જ્યાં ઉત્પન્ન થાય છે - ત્યાં પહેલા સમયે જે આહારના પુદ્ગલો ગ્રહણ કરે છે. તેને ઓજ આહાર કહેવાય છે. આજ આહાર માત્ર કાર્મણ શરીર દ્વારા ગ્રહણ થાય છે.

2. રોમ આહાર - શરીરની રોમરાય દ્વારા તથા સ્પર્શોન્દ્રિય દ્વારા જે ગ્રહણ થાય છે તેને રોમ આહાર કહેવાય છે. દા.ત. - ગરમીમાં ચાલવાથી મુસાફર

थाकी जाय छे अने विश्राम लेवा वृक्ष नीचे बेसे छे त्यारे तेने ठंडक अनुभवाय छे केम के, ठंडी हवाना परमाणुओ शरीरनी रोमराय द्वारा ग्रहण थई ठंडकनो अनुभव करावे छे.

3. कवल आहार - जे आहार मुख द्वारा ग्रहण करीए तेने कवल आहार कहेवाय अथवा आपणे शरीरमां प्रक्षेप करीए - नांखीए ते पण कवल आहार कहेवाय छे. दा.त. - Glucose चढाववो.

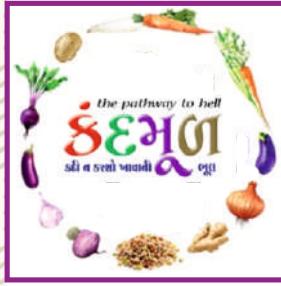
आहार क्यारे लेवो जोईए?



ज्यारे भूख लागी होय त्यारे आहार लेवो जोईए. भूख लाग्या वगर भोजन लेवाथी ते पचतुं नस्थी अने रोगनुं कारण बने छे. माटे भूख लागी होय त्यारे ज जमवुं ए आरोग्य माटे उत्तम छे अने आनाथी वारंवार खा-खा नीवृत्ति उपर control आवे छे.

सूर्योदय पछी अने सूर्यास्त पहेलानो समय आहार ग्रहण करवा माटेनो उत्तम समय छे. जैन धर्ममां बताव्यां प्रमाणे खरी रीते सूर्योदय बाद 48 मिनिट पछी अने सूर्यास्त पहेला जमवुं जोईए कारण के, आपणी होजरी (पेट) सूर्योदयनी साथे खूले छे अने सूर्यास्त थतां बंध थई जाय छे माटे रात्रे खाधेलुं digest थतुं नस्थी. वळी सूर्यास्त थतां अंधकारमां अनेक सूक्ष्म जीवो उत्पन्न थाय छे. ते जीवो अत्यंत सूक्ष्म होवाथी आपणने आंखेथी देखाता नस्थी अने आपणा भोजनमां पडे छे अने मृत्युने शरण थई जाय छे. माटे रात्रि भोजन न करवुं जोईए.

नियमित समये आहार ग्रहण करवो जोईए जेथी पाचकरस पूर्ता प्रमाण मां मळे छे.



केवो आहार न लेवो जोईए?

कंदमूळ - कंदमूळ न खवाय कारण के कंदमूळना एक शरीरमां अनंता जीवो रहेला छे. तेना वपराशमां अनंता जीवोनी हिंसा थाय छे. माटे ज पुरी त्यङ्गडड शाकभाजी खाईए अने एक ज वार कंदमूळ खाईए तो तेमां वधारे पाप छे.

- फणगावेला कठोळमां अनंता जीवो उत्पन्न थाय छे, माटे ते क्यारेय पण खावा नहीं.
- जेमां हाडकानो powder वर्गे वापर्यु होय तेवी वस्तु खावी नहीं तेम ज वापरवी नहि.
- Nuts आखा न खवाय तेने फोलीने check करवुं तेमां कोई जीवात तो नथी ने.
- काचा शाकभाजी, पान, फळ, फूल सचेत होय छे. माटे बने त्यां सुधी तेने खावा. फळने सुधारीने एमांथी बीज काढी लीधा पछी ते अचेत बने छे. कोई पण फळ आखे आखुं न खावय.
- वासी खोराक न खवाय. जेमां पाणीनो भाग होय एवी वस्तु बीजे दिवसे न खवाय. ते वस्तु बगडी जाय, तेमां फूग थई जाय माटे तेवी वस्तु बीजा दिवसे न खवाय.
- काचुं पाणी न पीवाय. काचा पाणीना एक टीपामां असंख्याता जीवो छे अने ते multiply थ्या करे छे. ज्यारे पाणी उकाळीए त्यारे ते multiplication बंध थई जाय छे अने पाणी जीव रहित बनी जाय छे.
- भोजनना स्वाद माटे उपरथी काचुं मीठुं न नाखवुं जोईए.
- जेमां खावुं थोडुं अने फेंकवुं वधारे तेवा पदार्थ न खावा जोईए. e.g. -



સીતાફળ, શેરડી વગેરે.

- જ્યાં veg-nonveg સાથે બનતું હોય તેવી હોટલમાં ક્યારેય જમવું નહીં. આપણને અનુમોદાનનો દોષ લાગે અને ચમચા વગેરેની ભેઢસેળ થઇ જવાની પણ પૂરી શક્યતા રહે.

કેવો આહાર લેવો જોઈએ?

- જીવન ખોરાક પર આધારિત છે. જમવું જરૂરી છે પણ સમજીને, વિચારીને જેમાં ઓછામાં ઓછી હિંસા થાય એવો વિવેક રાહીને આહાર લેવો જોઈએ.
- સાચો જૈન તો એ છે કે જે ખાતાં-ખાતાં રડે અને એમ વિચારે કે એવો અવસર ક્યારે આવશે કે હું આ બધા પાપમાંથી છૂટી જાઉં, મારે ખાવું જ ન પડે. મારો આત્મા મુક્ત બને, સિદ્ધ બને. અણહારક પદને પ્રાપ્ત કરે.

આહાર વિવેકના લાભ

- આહાર વિવેકથી જીવનમાં નિયમિતતા જાળવાય છે.
- પાચન શક્તિ સક્રિય બને છે.
- શરીરમાં સ્ફૂર્તિ રહે છે.
- કોઈ પણ કાર્ય પ્રત્યે ઉત્સાહ વધે છે.
- જમ્યા પછી થાળી ધોઈને પીવાથી સમૂર્છિમ જીવોની દયા પછાય છે.
- સૂર્યાસ્ત પહેલા ભોજન કરવાથી તીર્થકર પ્રભુની આજ્ઞાનું પાલન થાય છે, સાધુ-સાધ્વીની વ્હોરાવવાનો લાભ મળે છે અને છકાય જીવોની દયા પછાય છે.

उपकारभाव

उपकारभाव एटले शुं?

उपकारभाव एटले आभारभाव, उपकारभाव एटले कृतज्ञभाव.
ज्यां उपकार भाव होय त्यां व्यवहारमां विनय होय अनेविवाद
नहोय.

उपकार एटले gratitude. The quality of being thankful, readiness to show appreciation for and to return kindness. कोईना करेला उपकारोनी कदर करवी, तेमनो आभार मानी तेने वारंवार व्यक्त करवा, तेना उपकारोना ऋणथी मुक्त थवा जागृति राखवी. कृतज्ञ व्यक्ति कोईना करेला नाना उपकारने पर्वत जेटला मोटा माने छे. जेम धरतीमां एक बीज वाववाथी ते अनेक गणा फळ आपे छे तेम कृतज्ञ माणस धरती मातानी जेम करेला उपकारनी पाछल अनेकगणुं वळतर वाळे छे.

उपकार कोनो मानवो?

माता-पितानो उपकार

- प्रथम उपकार जन्म आपनार पालन, पोषण करनार माता-पितानो मानवो जोईए. माता -पिता ए बाळपणथी आपणा जीवन घडतरमां दया, करुणा जेवा सुसंस्कारोनुं सिंचन कर्यु छे. पळे-पळे आपणी care करी

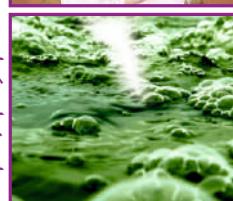
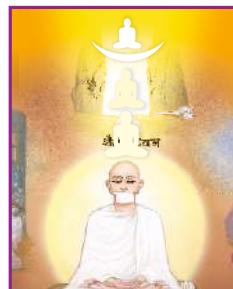


छे, पोतानी ईच्छाने छोड़ीने आपणी जरूरियातोने पूरी करी छे. आपणा सुख-दुःखमां माता-पितानो हमेशा साथ होय छे. जीवनना दरेक क्षेत्रमां आपणने अनुकूलता आपवानो तेओ प्रयास करे छे.

- निःस्वार्थ भावे आत्मजागृति करावनार देव, गुरु, धर्मनो उपकार करवो जोईए.

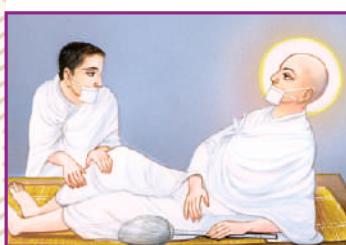
देवनो उपकार

- अरिहंत अने सिद्ध परमात्मा आपणा देव छे - अरिहंत परमात्माए आपणने सिद्धनी ओळख करावी. पोते संसार सागरने तरी गया अने अनेक जीवोना तारणहार बन्या छे.
- धर्मनी प्ररूपणा करी आपणने पण अनंत संसारना दुःखोथी मुक्त थई सिद्ध बनवानो सत्य मार्ग बताव्यो छे.
- ओछामां ओछा दर छ महिने एक आत्मा अवश्य सिद्ध गतिने पामे छे त्यारे एक जीव अव्यवहार राशिमांथी बहार नीकळे छे अने स्वतंत्र शरीरने पामी तेनाथी साधना आराधना करी शके छे माटे सिद्ध भगवंतनो आपणा उपर महाउपकार छे.



गुरुभगवंतनो उपकार

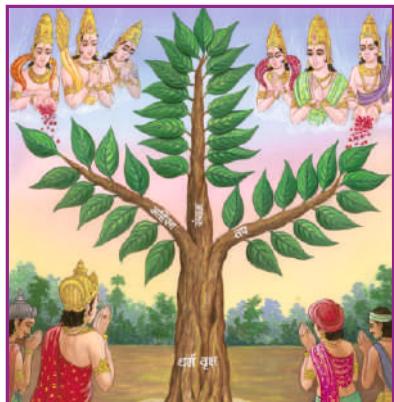
गुरु, शिष्यना पथदर्शक बनी परमात्माना पंथे लइ जाय छे. गुरुनी प्रेरणानो स्नोत शिष्यना जीवनने नवपल्लवित करे छे. गुरु पोताना अनुशासनथी शिष्यना आत्माने जागृत



करे, आत्मिक विकास करावे अने मोक्ष माटे पात्रवान बनावे छे. गुरु अनुशासन करता होवाथी बहारथी श्रीफल्नी जेम कडक देखाय छे पण अंदरथी शिष्य उपर करुणा वरसावे छे. जेना माथे गुरु होय तेना ज्ञानमां क्यारेय सडो न होय. ते ज्ञानी बने, तपस्वी बने, चारित्रवान बने छतां अहंकारी न बने. तेने पोतानी प्रत्येक सफलतामां गुरुनी ज कृपा अनुभवाय. गुरुना उपकारनुं वेदन करनार शिष्य ज गुरुनी कृपाने पामी शके छे अने मोक्षना अधिकारी बनी शके छे.

धर्मनो उपकार

- कोई लोको कुमकुमने मंगळ माने तो कोई चोखाने मंगळ माने. आम जुदा-जुदा प्रकारे मंगळनी मान्यता होय छे. पण दुनियामां मनाता दरेक मंगळोमां धर्म ए उत्कृष्ट, श्रेष्ठ मंगळ छे.
- धर्म व्यक्तिना जीवनने आदर्श अने पवित्रता तरफ दोरी जनार छे. ते पापथी अटकावी सन्मार्ग तरफ वाढे छे माटे ज ज्ञानी कहे छे "धर्मात् सुखम् पापात् दुःखम्". धर्मथी सुख मळे अने पापथी दुःख मळे छे. धर्म माणसने विकास तरफ वाढनार, नीतिमत्ता शिखवाडनार अने भव सागरथी तरावनार छे.



धर्मो मंगल मुक्तिकट्टुं, अहिंसा संजमो तवोः

देवावि तं नमसंसंति, जस्स धर्मे सयामणो ॥

भावार्थ : अहिंसा, संयम अने तप रूप धर्म उत्कृष्ट मंगल छे, जेमनुं मन सदा धर्ममां रमे छे, तेओने देवो पण नमस्कार करे छे.

शेठनो उपकार



- जे व्यक्ति आपणी आजीविकामां सहायक बने तेनो पण अनंत उपकार छे.

उपकार शा माटे मानवो जोईए?

- उपकारीनो उपकार मानवो ते आपणो विनय छे. विनय वगरनी प्राप्त करेली संपत्ति, सत्ता, ज्ञान, तप, जप आदि किंई प्राप्त थयुं होय तो पण मळेलुं फळतुं नस्थी अने गुमाववानो वारो आवे छे.
- उपकारनुं सतत स्मरण एटले उपकारीना हृदय सुधी पहोंचवानी master key छे
- उपकारीना उपकारनुं वेदन करवाथी फरीथी ते उपकारीजनना योग, संयोग प्राप्त थाय छे.

उपकार मानवाना लाभ

- उपकारीना उपकारने मानवाथी अहम् शून्य बनी शकाय छे.
- वाणी, वर्तन अने व्यवहारमां नप्रता प्रगटे छे.
- आत्मानी प्रगति थाय छे.
- जीवन शांतिमय, प्रसन्न अने चिंतामुक्त बने छे.
- श्रेष्ठ मळ्या पछी तेना उपकारनी अनुभूति थाय त्यारे श्रेष्ठनी वारंवार प्राप्ति थाय छे.
- आपणा ज्ञानावरणीय अने दर्शनावरणीय कर्मानो क्षयोपशम थाय छे.
- उपकारीनी आपणा पर सतत कृपा वरसती रहे

Did you know

उपकार क्रणथी मुक्त थवा शुं करवुं जोइए ?

माता-पिता ज्यारे धर्मथी विचलित थाय त्यारे तेमना आत्मानी रक्षा करी
तेमने धर्ममां स्थिर करवानो प्रयत्न करवो.

देवना उपकारथी मुक्त थवा शासननी प्रभावना करवी

गुरुना उपकारथी मुक्त थवा, गुरुनो भार हळवो करवो, गुरुनी साधनामां
सहयोगी बनवुं

धर्मना उपकारथी मुक्त थवा अन्यने धर्मनी प्रेरणा आपी धर्म भाव जगाडवा,
शासन प्रभावना करवी.

शेठना उपकारथी मुक्त थवा तेने धर्म मार्गनी प्रेरणा आपवी.

दृष्टांतः मुंबईना fort विस्तारमां University of Mumbai ना पटांगण मां
एक अनोखो tower छे. आ tower शिल्प स्थापत्यनुं एक अद्भुत दृष्टांत छे.
जेने जोनारा तेनी कारीगरी पर वारी जाय छे. सदीओथी मुंबईनी ओळख
बनेला आ towerना निर्माण पाढळ एक पुत्रनी मातृ भक्ति जोडायेली छे. आ
tower ए मात्र घडियाळ के ऐतिहासिक इमारत नथी, शिल्प स्थापत्यनुं
दृष्टांत मात्र नथी. आ tower तो छे माता प्रत्येनो पुत्रनो अनेरो प्रेम छे.

श्री राजबाई मुंबईना जैन श्राविका हता. तेओ मुंबईना प्रसिद्ध जैन
सद्गृहस्थ, मुंबई स्टोक एक्सचेन्जना स्थापक प्रथम ब्रोकर श्री प्रेमचंद
रायचंदना मातुश्री हतां. तेओ धर्मचुस्त अने सद्गुणी, जैन धर्मना सिद्धांतोने
पाळनारा एक आर्य श्राविका हता. तेओने दररोज चौविहार करवानो नियम
हतो. धीरे-धीरे उमर थतां तेमनी आंखोनी रोशनी क्षय पामी हती अने अंध
होवाने कारणे तेमने दररोज बधाने समय माटे पूछता रहेवुं पडतुं हतुं. विशाळ
अने व्यस्त परिवारमां अंध माताने सरखो जवाब न मळतो. मातानी आ

समस्या केवी रीते दूर करवी ए विचारो सतत सुपुत्र प्रेमचंदना मनमां चालता रहेता हता. एक बार विचार आव्यो के मातानी आ समस्याने दूर करवा एवो उपाय करुं के मातानी समस्या तो दूर थाय परंतु तेमनुं नाम अमर थई जाय. 1869 मां बहु मोटी रकम खर्चीने तेमने आ tower नुं निर्माण कर्यु. शरत करी के, आ tower साथे मानुं नाम जोडवामां आवे. आ tower ना डंका वागता राजबाइने जाण थती के चौविहारनो time थई गयो छे. ए पछीथी तेमने कदि कोईने चौविहार माटे समय पूछवानी जरूर न पडी अने निश्चिंत पणे धर्म आराधनामां स्थिर थई गया.

आ कथामांथी एवी प्रेरणा लेवी के माता-पिता ए तीर्थ स्वरूप छे तेमनी वृद्धावस्थामां तेमने धर्मनी अनुकूलता करी आपवी अने तेमना आत्माने धर्ममां स्थिर करवा तन, मन, धनने जोडी देवुं.

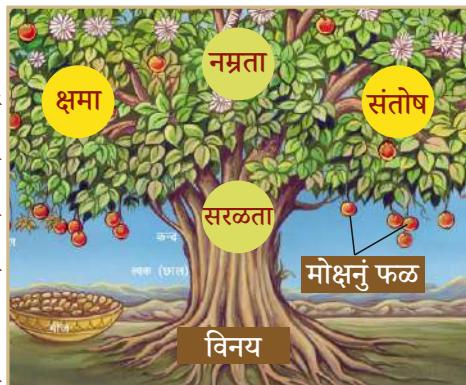
NO FOOD AFTER SUNSET



MORAL
भोजनने ग्रहण करती वखते
आसक्तभाव न राखवो.

विनय

- जे क्रिया (process) जीवने आत्मशुद्धि तरफ दोरी जाय छे ते processने विनय कहे छे.
- माता-पिता, वडीलो साथे नम्रतापूर्वकनो वहेवार करवो, तेओनी आज्ञानु पालन करवुं ते विनय छे.
- ते ज रीते देवाधिदेव-तीर्थकर परमात्मा अने गुरुनी आज्ञानु पालन करवुं अने तेओनी साथे अत्यंत नम्रता पूर्वक व्यवहार करवो ते उत्तम अने श्रेष्ठ विनय छे.
- विनय धर्मनुं मूळ छे. मोक्ष तेनुं फल छे.
- जेम कोई घटादार वृक्ष अनेक शाखा, प्रशाखा, पांडा, फूल, फलोथी शोभी रह्युं होय अने वर्षो सुधी अडीखम रहे छे तेना कारणमां तेना मूळियां ऊँडा अने मजबूत होय छे. जेम मूळना आधारे ज वृक्षनो विकास थाय छे, तेम विनय रूपी मूळना आधारे ज जीवनना अने अध्यात्मना दरेक क्षेत्रमां आपणो विकास थाय छे.



विपत्ति अविणीयस्स, संपत्ति विणीयस्स।

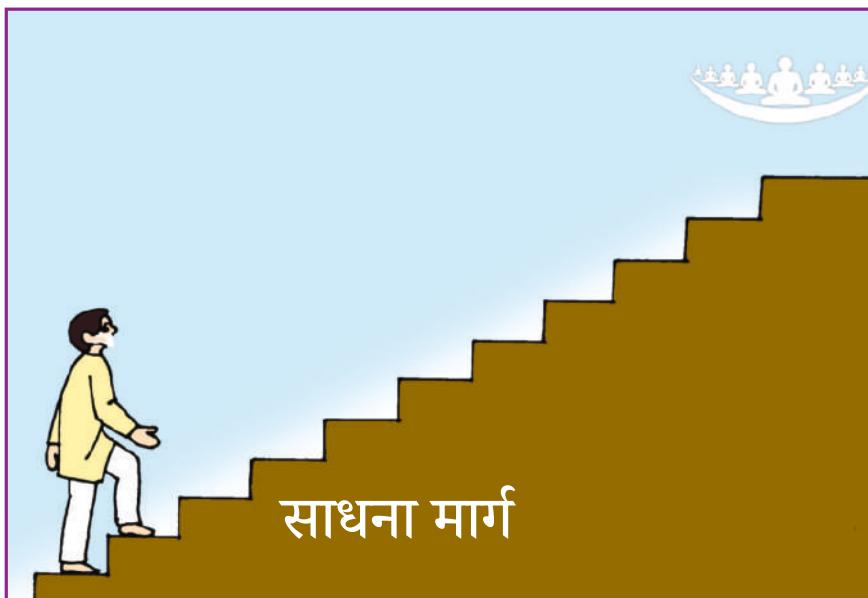
- जे अविनयी छे तेना जीवनमां विपत्ति अने अनेक प्रकारनी मुश्केलीओ आवे छे अने जे विनयवान छे तेना जीवनमां संपत्ति अने अनेक क्षेत्रोमां प्रगति होय छे. आ शास्त्र वचन छे. एक विनय गुणथी अनेक गुणो सहज रीते प्रगटे छे.

विनयवान व्यक्तिनो व्यवहार

- विनयी व्यक्तिने देव, गुरु, धर्म, विद्वानो, शास्त्रो, कला, ज्ञान प्रत्ये अंदरथी ज अत्यंत बहुमान, अहोभाव respect होय छे, प्रीति होय छे. तेथी तेमना दरेक कार्यमांथी साहजिक रीते, सहजताथी विनय छलके छे.
- विनयी व्यक्तिनी बोलचाल, वातचीत करवानी पद्धति, तेनी रीत-भात, वाणी, वर्तन अने व्यवहार (behaviour) अने attitude सौहार्दपूर्ण अने सौजन्यपूर्ण होय छे.
- विनयी व्यक्तिनी चाल धीमी पण मक्कम होय छे.
- वाणी मीठी, मधुरी अने प्रिय होय छे. चहेराना हावभाव मनभावन होय छे.
- आंखो भीनी-भीनी respect थी छलकती होय छे. ते दरेक क्रिया नग्रतापूर्वक बहुमानथी करे छे.
- विनय आभ्यंतर तप छे. आभ्यंतर तपमां विनय तपनुं स्थान छे. आ ज बतावे छे के, विनयनुं महत्त्व विशेष छे.
- सफळ व्यक्तिना जीवननो अभ्यास करीए तो जणाय आवे छे के तेमनामां विनय भारोभार रह्यो होय छे. अहंकार के अभिमानने स्थान नथी होतु. माटे ज, विनय गुणने आत्मसात् करवो जोईए. विनय गुणनी साधना करवी जरूरी छे.

विनय गुणना लाभ अपरंपार

1. विनयी व्यक्ति जीवनना दरेक क्षेत्रमां सफल थाय छे.
2. ज्यां-ज्यां जाय, त्यां तेनी जीत निश्चित होय छे.
3. लोकोनो प्रेम अने आदर प्राप्त करे छे.
4. तेना कार्य तेनी मेळे ज थवा लागे छे.
5. अंतरमां प्रगटेला विनय थकी आत्मशुद्धि थाय छे.
6. अध्यात्मना विश्वमां आंतर-चेतना जागृत थाय छे.
7. साधनाना मार्गमां आगळ वधी शके छे.
8. सम्यक्त्व प्राप्तिना (right vision) द्वार खूलीजाय छे. कारण के, विनयी व्यक्ति श्रद्धावान होय छे.
9. गुरुनी कृपा प्राप्त थाय छे.
10. उच्च गोत्र कर्मनो बंध थाय छे.

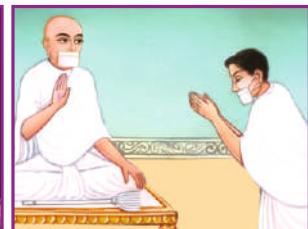
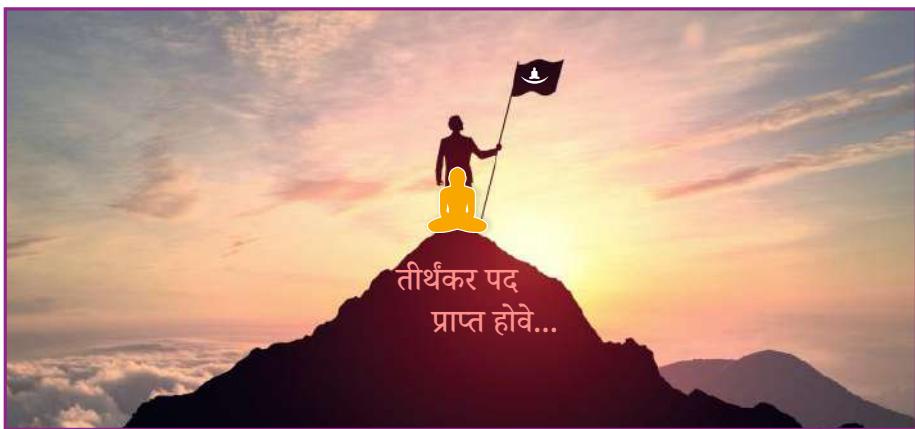


विनय

विनय विश्वमें कितना महान, देता सब कुछ कैसा महान.
विनय को जो जीवन में लाये, जीवन अपना वो सजाये.
खुशीयों के फूल खिल-खिल जाये, जीवन बाग महेकता जाये... विनय...

विनय से पूर्ण ज्ञान खिले, संपत्ति सद्गुण आकर मिले.
सज्जनोका प्यार मिले, संतो की अनुपम कृपा मिले... विनय...

विनय से अहंकार तूटे, विनय से अभिमान हरे, विनय तो अज्ञान हरे.
विनय ज्ञानदीप धरे, उच्च गोत्र कर्म बंध होवे...
तीर्थकर पद प्राप्त होवे... विनय...



विभाग - 4

धर्म अने विज्ञान

(Science and Religion)

धर्म अने विज्ञान शुं
साथे-साथे चाले छे?

बन्ने वच्चे अंतर छे
के बन्ने वच्चे साम्य छे?

दिन-प्रतिदिन
अवनवी शोध करतुं
विज्ञान आपणने अचंबित
करे छे. अजब गजबनी शोध करतां वैज्ञानिको माटे आपणने मान थाय छे.

जे शोध करतां वैज्ञानिकोने वर्षो लागे छे, जेनी शोध माटे विविध प्रकारना आधुनिक साधनो laboratoryमां वसावाय छे अने घणां प्रयोगो पछी एसिद्धांत जाहेर करवामां आवे छे.

परंतु परमात्मा पोतानी साधना द्वारा भीतरना ज्ञानने प्रगटावे छे. ते ज्ञानना प्रकाशमां पूर्ण सत्यने निहाळे छे. ज्यां कोइ laboratory, प्रयोगना साधनो नथी होता मात्र आत्मज्ञान होय छे.

विज्ञान आजे कहे छे ते वात लगभग 2600 वर्ष पहेलां परमात्माए कही छे ते जाणीए त्यारे थाय के, प्रभुना ज्ञानना सागर सामे विज्ञान एक बिंदु समान छे.



આવો, આજે જાણી એ એવા થોડાક નિયમો અને સિદ્ધાંતો.

1. ધર્મ: વનસ્પતિમાં પણ જીવ છે. Plants have lives too. એટલું જ નહીં, વનસ્પતિમાં લાગણી અને સંવેદના પણ છે.

વિજ્ઞાન: આજથી લગભગ 121 વર્ષ પહેલાં ભારતીય વૈજ્ઞાનિક શ્રી જગદીશ ચંદ્ર બોઝે શોધી કાઢ્યું કે વનસ્પતિમાં જીવ છે. અનેક પ્રયોગો દ્વારા વનસ્પતિમાં સંવેદના પણ છે એ સાબિત થયું છે.

2. ધર્મ: સૂર્યાસ્ત પછી ભોજન કરવાથી ઘણાં જીવોની વિરાધના થાય છે એટલાં માટે ચૌવિહાર કરવો જોઇએ. રાત્રિભોજનનો ત્યાગ કરવો જોઇએ.

વિજ્ઞાન: Doctors અને dieticion વહેલા જમવાની સલાહ આપે છે, જેથી ભોજન સારી રીતે પચી શકે, જેથી વજન વધે નહીં અને બીમારી આવે નહીં.

3. ધર્મ: પાણી ઉકાળીને પીવું જોઇએ.

વિજ્ઞાન: બીમારીમાં તેમજ સામાન્ય રીતે પણ doctors ઉકાળેલું પાણી પીવાની સલાહ આપે છે, જેથી અનેક રોગોથી બચી શકાય.

4. ધર્મ: પરમાત્મા સમવશરણમાં દેશના આપે ત્યારે ત્યાં ઉપસ્થિત સર્વ દેવ-દેવી, તિર્યંચો, મનુષ્યો પોતાની ભાષામાં સમજી શકે છે.

વિજ્ઞાન: આજે જ્યારે દેશ પરદેશમાં કોઇ નેતા પોતાની ભાષામાં speech આપે ત્યારે એ language ન સમજનારા બીજા નેતાઓ એક head phone ફહેરીને સાંભળે તો તેઓને તે પોતાની ભાષામાં સમજાય છે. આ શોધ વિજ્ઞાને હમણાં કરી છે. જ્યારે 2600 વર્ષ પહેલાં headphone કગર દરેક જીવને પોતાની ભાષામાં પ્રભુની દેશના સમજાતી હતી. છેને amazing fact?

5. ધર્મ: એક શબ્દ બોલાય એટલે તરત જ ચૌદ રાજલોક સુધી ફેલાઇ જાય છે. શબ્દ એ પુજૂરુષ છે.

विज्ञान: आ सिद्धांत पर Telephone, Mobile, Livetelecast अने T.V. audio, video and youtube काम करे छे.

6. धर्म: सर्व जीवो मारा जेवा ज छे. सर्व जीवो मारा मित्र छे. कोइ माटे मने वेर के द्वेष नथी. धर्मनु heart मैत्रीभाव छे.

विज्ञान: आजे लोकोने समजायुं छे के विश्व होय के व्यक्ति, संस्था होय के राष्ट्र. शांतिमय, सुखी अने समृद्ध जीवन माटे जैन धर्मना पायाना सिद्धांतो खूब महत्वना छे. अहिंसा, अनेकांत अने अपरिग्रह. '3 A' lifestyle is best lifestyle. अने एटले ज विश्वनी नामांकित Universitiesमां जैन धर्मना सिद्धांतोनो अभ्यास करावामां आवे छे.

इकागाइ एक एवी जीवन पद्धति छे जेने कारणे ते देशना लोको खूब लांबु दीर्घायुष्य, तंदुरस्त अने आनंदमय जीवन जीवे छे. तेना कारणोनो अभ्यास करतां जणायुं के तेओ रात्रि भोजन करतां नथी, सात्विक आहार ले छे, भूख करतां ओछुं जमे छे, व्यायाम करे छे, बधां साथे मैत्रीपूर्ण व्यवहार करे छे. आम जोवा जड्हए तो तेओए जैन लाइफस्टाइल अपनावी छे. चौविहार, उणोदरी, धर्म क्रिया अने मैत्रीभाव- आज वात प्रभुए करी छे.

धर्म अने विज्ञानना द्रष्टिकोणमां अंतर छे. विज्ञान स्व केन्द्रित छे. साधनोना उपयोग द्वारा सुख अने सगवड केम वधे, तेवुं विचारे छे.

धर्म सर्वना सुखनो विचार करे छे. धर्ममां मैत्री-क्षमादि द्वारा स्व-परनुं कल्याण अने स्वयंथी आत्मशक्तिनो विकास थाय तेवुं ध्येय समायेलुं छे.

विज्ञान बाह्यदृष्टिथी सुखने मूलवे छे.

धर्म आंतरदृष्टिथी सुखने मूलवे छे.

चालो, आजना वैज्ञानिक युगमां पण

आपणी धर्मश्रद्धाने द्रढ बनावीए.

विभाग - ५

कथा विभाग

नयसार - प्रभु महावीरनो प्रथम भव

नियमनुं जीवनमां खूब महत्व छे. नानकडो नियम पण शुभ भावथी, निष्ठापूर्वक पलाय तो खूब ज लाभकारी छे. आ कथननी सत्यता आपणने समजाशे नयसारना दृष्टांत द्वारा.

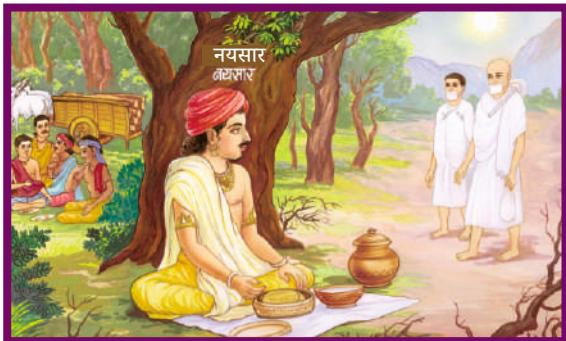
आ जंबूद्धीपना महाविदेह क्षेत्रमां प्रतिष्ठान नामना गाममां नयसार नामनो सुथार रहेतो हतो. ते गामना लोकोनी हंमेशा हितचिंता करतो हतो. ते साधु-संतोना समागममां न होवा छतां स्वभावथी ज गुणग्राही, दयावान अने परोपकारी तथा व्यसनोथी दूर हतो. नगरमां एनी सारी प्रतिष्ठा हती. नयसारने एक नियम हतो "कोई अतिथिने जमाडीने जमवुं, कोईने जमाडीने जमवुं." आपणी भारतीय संस्कृतिमां अन्यने भोजन कराववानो घणो महिमा छे. आपणे घरमां पण जोयुं छे के, गाय अने कूतराने रोटली, कबूतरने जुवार, पक्षीने चण, कीडीने कीडीयारू, गरीब-भूख्यां जनने भोजन. आ आपणा संस्कारोमां वणायेली वात छे.

नयसार एक दिवस स्वामीनी आज्ञाथी 500 सेवकोने साथे लई लाकडा कापवा जंगलमां गया हतां. काम करतां मध्याह (बपोर)नो समय थयो. साथी सेवको माटे भोजन पाणीनी तमाम व्यवस्था साथे राखी हती. भोजननो समय थयो एटले, तेमणे सेवकोने भोजन माटे बेसाडी दीधां. परंतु पोताना नियम प्रमाणे राह जुए छे- कोई अतिथि, अभ्यागत, साधु-संत आवे तो पहेला तेमने

जमाडुं अने पछी हुं जमुं.

अहिंया नयसारनी नियम प्रति दृढता केवी छे ते देखाई आवे छे. एनी जग्याए बीजी व्यक्ति होय तो एम विचारे के, जंगलमां कोई क्यांथी मळे? खरा बपोरे आ जंगलमां कोई आवे ज नहीं ने? चालो, आजनो दिवस एमने एम जमी लउं. काले नियम पाळीश. पण, नयसार तो संकल्पवान छे. ए तो दूर-दूर सुधी चारेय बाजु जूए छे.

झाड ऊपर चडीने लाबे
सुधी चारेय बाजु नजर फेरवे
छे. घोर जंगलमां कोई देखातुं
न हतुं. थोडा समय पछी एणे
श्वेत वस्त्रधारी बे साधुओने
दूरथी निहाळ्या एटले खूब ज
आनंदित थई झाड परथी
नीचे उतरी संतोने लेवा माटे गया.



मुनि भगवंत पासे पहोंची विनयथी बे हाथ जोडी नमस्कार करे छे अने पूछे छे, आप भर बपोरे जंगलमां क्यांथी? त्यारे मुनिराज कहे छे अमे एक गामथी बीजे गाम जतां रस्तो भूली गया छीए एटले आ बाजु आव्यां छीए. नयसार तेमने कहे छे, पहेला आप कृपा करीने भिक्षा ग्रहण करो पछी हुं आपने रस्तो बतावीश. एम वारंवार विनंती करे छे. नयसारने खबर नथी के, आ जैन साधु छे. आजे एने सुपात्रदाननो अमूल्य लाभ मळवानो छे.

सुपात्रदान सौथी श्रेष्ठ दान छे, आपणे हंमेशा सुपात्रदाननी भावना भाववी जोईए. साधु-संतोने विनंती करी घरे पधारवा माटे कहेवुं जोईए अने एक श्रावकनुं घर तो एवं होवुं जोईए जे उपाश्रयथी नजीक होय, तेमज पहेले के बीजे माळे होय जेथी सुपात्रदाननो वारंवार लाभ मळे.



नयसारने तो भर जंगलमां लाभ मळे छे. साधु भगवंतोने पोतानी साथे लावेल भोजन सामग्रीमांथी भिक्षा अर्पण करे छे. खूब भावथी अने उल्लासथी भिक्षा आपे छे.

मुनिराज पण प्रसन्नताथी गौचरी ग्रहण करे छे अने धर्मलाभ आपे छे. पछी, नयसार मुनिराजने रस्तो बताववा तेमनी साथे जाय छे.

आपणे त्यां संत-सतीजी गौचरी माटे पधारे, त्यारे गौचरी व्होरावीने तेमनी साथे उपाश्रय सुधी जवुं जोईए अथवा थोडे दूर सुधी जवुं जोईए. ए आपणो तेमनी प्रत्येनो विनय अने उपकार भाव छे. साधु भगवंत नयसारना उच्चगुणो, तेनो विनय, तेनी भक्ति, तेना भाव जोईने धर्म-बोध आपे छे. हितकारी वचनो कहे छे.

नयसारे साधु भगवंतने मार्ग बताडयो अने साधु भगवंते नयसारने भव तरवानो मार्ग बताव्यो. संसारमां अनंतकाळथी जन्म-मरण करतां नयसारना

आत्माने सुपात्रदानथी अने संतोना समागमथी समकितनी-सत्य समजनी प्राप्ति थइ. अर्थात् देव-गुरु-धर्म पर श्रद्धा थइ. प्रथम नयसारना भवथी आत्मानी विकास यात्रानो प्रारंभ थयो अने २७मां प्रभु महावीरना भवमां तेनी पूर्णता थइ. तेथी प्रभुना २७ भवमां प्रथम नयसार सुथारनो भव महत्वपूर्ण छे.

ते भवनो एक नानकडो नियम भव-तारणहार बनी जाय छे.

नयसारनो आत्मा एटले प्रभु वीरनो आत्मा. समकित प्राप्ति पछीनो प्रभु वीरनो प्रथम भव.

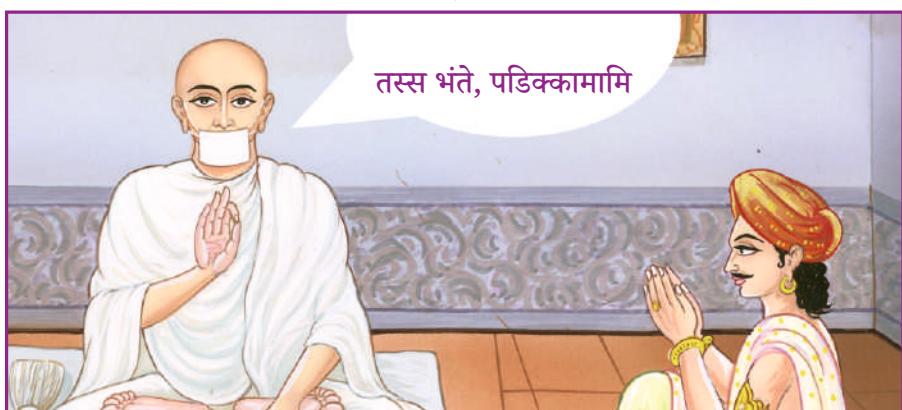
MORAL :

देवानुप्रियो!

नयसारना जीवनमांथी आपणे शुं शीखीशुं? आपणे शुं बोध ग्रहण करीशुं?

नियमनुं महत्व समजीशुं, नियमोने जीवनमां ग्रहण करीशुं अने द्रढताथी तेनुं पालन करीशुं.

नियम लेवाथी मनोवैज्ञानिक रीते आपणी मनः शक्तिनो विकास थाय छे. मनने control करवानी शक्तिनो विकास थाय छे. जे जीवनना दरेक पगले अने दरेक क्षेत्रमां उपयोगी बने छे.



अनोखी जीवदया मेघरथ राजानी

आपणा 16मां तीर्थकर प्रभु शांतिनाथ भगवाननो पूर्वनो त्रीजो भव एटले मेघरथ राजानो भव! मेघरथ राजा अत्यंत करुणाशील हतां. एकवार इशानेन्द्रे (बीजा देवलोकना इन्द्र) देवोनी सभामां मेघरथ राजानी जीवदयानी अत्यंत प्रशंसा करी. ते सांभळी एक मिथ्यात्वी देवने तेमनी परीक्षा करवानुं मन थयुं अने ते आ पृथ्वी पर आव्या.

पृथ्वी पर तेमणे एक कबूतर अने बाज पक्षीने लडतां जोयां. सारो अवसर जाणीने देव ते बनेना शरीरमां अधिष्ठित थइ गया. (प्रवेश करी गया) मेघरथराजा सभामां बेठां हतां. ते समये कबूतर तेमना खोळामां आवीने बेसी गयुं अने "मारी रक्षा करो, मारी रक्षा करो" एम बोली अभयनी मांगणी करवा लाग्युं. राजाए तेने कह्युं "हे कबूतर ! तुं भय पामीश नहीं. हुं तारुं रक्षण करीश" कबूतरने शांति थइ.

ए समये एक बाज पक्षी आव्युं अने तेणे राजाने विनंति करी के- " हे राजन! तमे दयालु छो, तो मारुं पण रक्षण करो. मने खूब भूख लागी छे, जो भोजन न मळे तो हुं मरी जईश, तेवी पीडा थई रही छे. राजन् : हुं आपना माटे भोजननी व्यवस्था करुं छुं. बाज पक्षी: "परंतु आपना खोळामां बेठेलुं कबूतर ज मारुं भोजन छे. कबूतरने नीचे मूळो, तेथी हुं तेनो शिकार करीने मारुं भोजन मेळवी लउं" राजाए कह्युं "तेने में अभयदान आप्युं छे. हुं तने एकथी चडियाता पकवान आपुं छुं, तुं तेनुं भक्षण करी तारी क्षुधाने शांत कर."

बाज पक्षीए कह्युं, "अमारुं भोजन तो ताजुं मांस ज होय, अमे बीजुं कांइ न खाइए." त्यारे राजाए विचार्यु, ताजा मांस माटे शुं करवुं? कोई पण जीवनी हिंसा वगर ताजुं मांस मळवुं शक्य नथी. बीजा जीवनी हिंसा करवी एना करतां

मारा शरीरमांथी ज थोडुं मांस
काढीने आपुं. राजान् : "तुं
थोडी धीरज राख हमणां ज
भोजन मळी जशे." बाज पक्षी
: "हे राजान्, थोडा मांसथी
मारी क्षुधा शांत थशे नहीं मारे
तो कबूतरना वजन जेटलुं ज
मांस जोईशे." तेथी राजाए



अनोशी जीदया

ध्यानमग्न मधरथ मुनि

एक त्राजवुं मंगाव्युं तेना एक पल्लामां कबूतर मूकयुं अने बीजा पल्लामां
पोतानी जांघनुं मांस कापीने मूकवा लाग्यां. कारण के, तेने कबूतरने बचाववुं
हतुं अने बाज पक्षीने भोजन पण आपवुं हतुं. राजा अत्यंत दयाळु हतां.
जीवदया तेमनी हाड-हाडनी मज्जामां व्यापेली हती.

महापुरुषो शरणे आवेला शरणागतनी जीवना जोखमे पण रक्षा करतां
होय छे.

देवमायावी कबूतरनुं ज पल्लुं भारे रह्युं. छेल्ले राजा पोते ज पल्लामां
बेसी गयां अने बाज पक्षीने पोतानुं ज भक्षण करवानुं कह्युं.

बधां प्रजाजनो, राणीओ वर्गेरे रडवा लाग्यां. पण राजा तो पोताना
निर्णयमां मक्कम रह्यां. राजाना द्रढ जीवदयाना भावो जोइ देव पोताना मूळ
स्वरूपमां प्रगट थया अने "पोते तेमनी परीक्षा करवा आव्यो हतो." एम कही
राजानी क्षमा मांगी स्व स्थाने चाल्या गया. राजा पहेलां जेवा ज स्वस्थ बनी
गया.

समय जतां तेमना पिता तीर्थकर धनरथजी ते नगरमां पधार्या तेमनो
उपदेश सांभळी मेघरथ राजाने वैराग्य भाव जागृत थयो. तेमणे पिता मुनि पासे
दीक्षा लीधी. लांबा समय सुधी संयम- तपनुं पालन करी तीर्थकर नामकर्म

बांध्युं आयुष्य पूर्ण करीने सर्वार्थसिद्ध विमानमां देवरूपे उत्पन्न थयां.

देवभवनुं आयुष्य पूर्ण करीने विश्वसेन राजा अने अचिरादेवीनी कुक्षीए जन्म धारण कर्यो. तेओ गर्भमां आव्या, त्यारे राज्यमां मरकीनो रोग फेलायेलो हतो. तेमना पुण्यप्रभावे राज्यमां रोग शांत थई गयो. तेथी मातापिताए ते बाळकनुं नाम शांतिनाथ राख्युं. मोटा थइने तेओए चक्रवर्ती पदनी प्राप्ति करी अने पछी तेओ आपणा सोळमां तीर्थकर श्री शांतिनाथ भगवान थया.



चक्रवर्ती शांतिनाथ

भगवान शांतिनाथ

MORAL

देवानुप्रियो! मेघरथ राजानी जीवदया जोइने! आपणे कदाच एटली मक्कमता के सहनशीलता न राखी शकीए. पण जेटली थड शके तेटली जीवदया तो पाळी शकीएने! राजानी जेम कदाच कबूतरने न बचावी शकीए पण कम से कम पतंग उडाडवानुं बंध करीने अन्य मित्रोने पण समजावी तेमने मरतां तो बचावी शकीए ने! तेम ज होळी रमवानुं बंध करी पाणीना जीवोने बचावी शकीए. नीचे जोइने चालीए तो पग नीचे कचडातां जीवजंतुने बचावी शकीए. घास पर न चालीने, फूल-पानने न तोडीने वनस्पतिकायना जीवोनी दया पाळी शकीए. कारण वगर पंखा चालु न राखीने वायुकायना जीवोनी जतना करी शकीए.

आम घणी रीते जीवोनी दया पाळी शकाय छे. जीवनमां आवी जीवदया अपनावशोने!

पार्श्वप्रभुनी अनुकंपा

पार्श्वप्रभु कोण हतां ए तो खबर ज छे ने! आपणा 23मां तीर्थकर प्रभु हतां. एमना जीवननी एक घटना बहुज जाणवा जेवी अने समजवा जेवी छे.

वाराणसी नगरीमां एकदा कमठ नामक एक मिथ्याधर्मी संन्यासी "पंचाग्नि" नामक तप तपतो हतो. तेना माथे जटा धारेली हती अने अंगे राख चोळेली हती. चारेबाजु सळगती धूणीओ वच्चे मात्र एक लंगोट पहेरीने ते बेठो हतो अने अग्निनी आतापना लेतो हतो. अज्ञानी नरनारीओ तेनी पूजा करवा जवा लाग्यां.

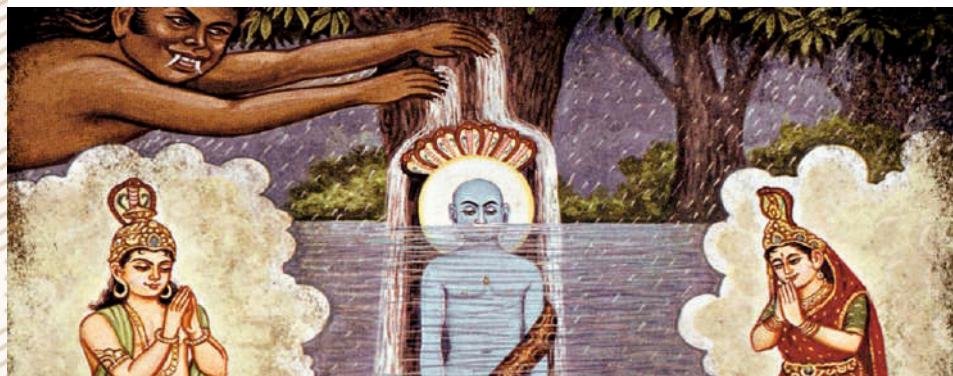
अज्ञानी सत्यधर्मने ओळखवानी कोशिश करतां नथी. देखादेखीनो धर्म करतां रहे छे अने फळस्वरूपे संसार वधारतां रहे छे. जनसामान्य ज्यां चमत्कार होय त्यां नमस्कार करे पण साचो धर्मी ज्यां गुण देखाय त्यां नमस्कार करे.

पार्श्वकुमार पण
जीवोना हित-श्रेय अर्थे
त्यां गया. भगवान तो
जन्मथी ज मति, श्रुत अने
अवधिज्ञानना धारक होय
छे. भगवाने पोताना
अवधिज्ञानमां जोयुं के-
"जे अग्नि सळगावेलो
हतो तेना लाकडामां एक
नाग अने नागणी पण बळी रह्यां हतां."



भगवाने लोकोने जणाव्युं के जे धर्ममां दया नथी ते धर्म नथी तेनाथी तो लाभने बदले हानि ज थाय छे. फकत कायाने कष्ट आपवाथी तप थइ जतुं नथी. अहंकारी कमठने आ वात गमी नहीं. एणे कह्युं, "राजपुत्रो तो हाथी, घोडा खेलावी जाणे छे, धर्मने तो अमे ज जाणीए!" त्यारे पार्श्वकुमारे सेवकने आज्ञा करी लाकडुं खोलाव्युं तो तेमांथी नाग-नागणी नीकळ्यां. ते थोडा बळी गयां हतां. पार्श्वकुमारे तत्काल तेओने नमस्कार मंत्र संभळाव्यो. प्रभुना दर्शनथी अने नमस्कार मंत्रना प्रभावथी तेओ मरीने नागकुमार देवोना इन्द्र-धरणेन्द्र अने इन्द्राणी - पद्मावती रूपे उत्पन्न थयां.

आ बनाव पछी कमठ विशेष तप करवा लाग्यो परंतु समजणना अभावे तेनुं तप श्रेष्ठ फळदायी न थयुं अने कमठे पोतानुं अनंत संसार परिभ्रमण वधारी लीधुं.



धरणेन्द्र अने पद्मावती पोताना गत जन्मना उपकारीने भूल्या नहीं. ज्यारे कमठ तापस मृत्यु पामीने मेघमाळी नामनो देव बन्यो. अने पूर्वना वेरभावने याद करी अत्यंत क्रोधमां आवी, ध्यानमग्न पार्श्वप्रभुने घणा उपसर्गो आपवा लाग्यो. एकवार प्रभु ध्यानस्थ मुद्रामां उभा हता त्यां मुशळधार वरसाद वरसाव्यो, प्रभुना नाक सुधी पाणी आवी गया. प्रभु अडगपणे उभा हता ते

समये धरणेन्द्रे अवधी ज्ञानथी जाणीने प्रभुनी सुरक्षा माटे त्यां पहोंची गया. एक सुवर्ण कमळ बनावीने प्रभुने तेनी उपर लइ लीधा अने उपर सात फेणवाळा सर्पनुं रूप बनावी छत्र कर्यु. प्रभु समभावमां स्थित हतां. धरणेन्द्रे मेघमाळीने समजाव्यो के तने सदुपदेश आपीने पापथी बचाव्यो हतो तेने तुं परेशान करे छे? मेघमाळी देवे प्रभुनी सामे द्रष्टि स्थिर करी. परमात्माना प्रभावे ते शांत थइ गयो अने प्रभुनी क्षमा मांगीने स्वस्थाने चाल्यो गयो. परमात्मा अखंड समभावमां स्थिर रह्या.

MORAL

देवानुप्रियो!

प्रभुना जीवननी आघटना परथी आपणे शुं बोध लेवानो छे?

आपणी दया मात्र मनुष्यो प्रत्ये ज नहि परंतु पशु-पक्षी अने सर्प जेवा जीवो प्रत्ये होवी जोईए. नमस्कारमंत्रना प्रभावे सर्प पण देव बनी गयो. एटले आपणे कोई पण विकट परिस्थितिमां नमस्कारमंत्रनुं स्मरण करवुं जोईए. आपणे कोईए पण करेला उपकारने याद राखवा जोईए.

गुरुवर्यों पासेथी साचो धर्म जाणीने तेने जीवनमां अपनाववो.

जे आत्मकल्याण करे, तेवा धर्मने जीवनमां स्थान आपवुं.

देखादेखीनो धर्म नहीं पण सत्य समजनी प्राप्ति करावता धर्मने ज महत्व आपवुं.

आर्द्र कुमार - पाम्यां कल्याणमित्र

आर्द्र कुमारनो जन्म एक अनार्य देशमां थयो हतो. अनार्य देश एटले ज्यां देव-गुरु-धर्म न होय. संत-सतीजी न होय. एटले धर्मनुं कोई ज्ञान के साची समज न होय.

पण, आर्द्र कुमारनुं luck ए हतुं के एमना मित्र आर्य देशमां एटले के भारतमां हतां. आपणे बधां ज आर्यकूळमां जन्म्य छीए. जेथी आपणने तीर्थकर भगवंतोनो धर्म मळयो छे. धर्मनो बोध आपनारा अनेक आचार्य भगवंतो, गुरु भगवंतो अने संत-सतीजी मळ्यां छे.

आपणने साची समज आपनारा धर्मगुरु मळ्यां छे.

धर्म स्वयं तो पामवानो ज होय छे पण साथे अन्यने पमाडवानो पुरुषार्थ विशेष फळदायी होय छे.

आर्द्र कुमारना मित्र कोण छे? तेमना मित्र छे अभयकुमार जे श्रेणिक राजाना पुत्र छे अने जेमनी बुद्धिमत्ताना गुणगान हजारो वर्ष पछी पण गवाई रह्या छे तेवा अभयकुमार.

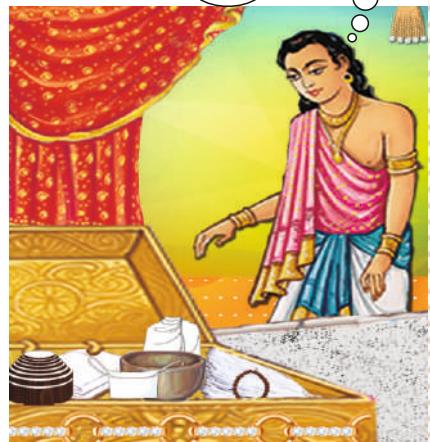
अभयकुमार विचारे छे मारा मित्र ने हुं केवी gift मोकालावुं? केवी भेट आपुं?

आपणे पण बधांने gift आपतां होइए? आपणे gift लेवा जड्हए तो शु विचारीए? पहेलां तो किंमत नक्की करीए अने पछी? जात-जातनी gift नो विचार करीए flower अने card थी लङ्ने jewellery सुधीनी जीवन उपयोगी वस्तुनो विचार करीए. क्यारेक ज कोई धर्मनुं पुस्तक के CD के एवी उत्तम वस्तुनो विचार करीए.

पण अभयकुमार तो धर्मना रंगे रंगायेलां छे अने एटले विचारे छे के, एवी वस्तु मोकलावुं जेथी मारो मित्र धर्मने पामे अने एना आत्मानुं कल्याण थाय. जे मित्रनुं हित विचारे ए मित्रने कल्याण मित्र कहेवाय. माटे मित्र मळे तो केवा मळे? अभयकुमार जेवा कल्याणमित्र मळे. मित्र करवा तो केवा मित्र करवा? जे मने धर्मनो मार्ग बतावे, जे मने साचो मार्ग बतावे.

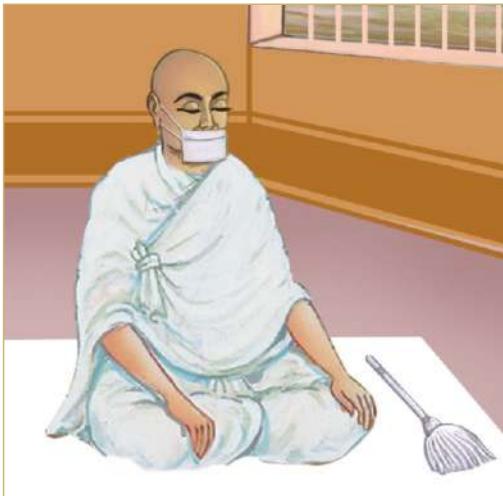
कल्याणमित्र अभयकुमार पोताना मित्र आर्द्र कुमारने सामायिकना उपकरणो भेट स्वरूपे मोकलावे छे. आर्द्र कुमार मित्रए मोकलावेली भेट खूब उत्साहथी खोले छे. तो शुं जुए छे? अंदर तो सामायिकना उपकरणो छे. हवे अनार्य देशमां जन्मेलां आर्द्र कुमार माटे आ नवी वस्तु छे एने तो आवुं काईं जोयुं ज नथी... विचारे छे आ बधुं शुं छे? आसन, मुहपत्ती, माळा, गुच्छो बधुं आम थी तेम फेरवे छे... आने शुं कहेवाय? आ बधुं शुं मोकल्युं छे? जोतां-जोतां एने थाय छे के आ बधुं में कयांक जोयुं छे...? क्यां जोयुं छे...? क्यां जोयुं छे...? एम विचारतां-विचारतां जातिस्मरण ज्ञान थाय छे. पोतानो पूर्वभव देखाय छे. आ तो सामायिकना उपकरणो छे. पूर्वना भवमां में पण आ उपकरणो वापर्या छे अने सामायिकनी आराधना करी छे आ बधुं ज स्मृतिमां आव्युं. तेना हृदयमां खूब भाव जाग्या अने निर्णय कर्यो आ देश छोडीने अभयकुमार पासे जवुं. आर्य देशमां जवुं अने त्यां जइने संयम मार्गे जवुं.

आम एक नानकडी भेट आर्द्र कुमार माटे महान अने उत्तम gift बनी



जाय छे. तेमने सत्यना मार्ग लइ
जाय छे.

आर्द्र कुमार आर्यक्षेत्रमां
आव्या, स्वयं पोतानी मेले
दीक्षा ग्रहण करी. अनेकोने
प्रतिबोधित करी प्रभु पासे
दीक्षा लेवा मोकल्या स्वयं पण
प्रभुना चरणोमां आवी संयम
अने तप द्वारा कर्मोनो क्षय करी
निर्वाण पाम्या.



MORAL

देवानुप्रियो!

तमारे केवा मित्र बनवुँ छे?

कल्याणमित्र बनी बधानो कर्मक्षय कराववो छे के संसारी मित्र बनी
बधाने कर्मबंध कराववो छे?

आर्द्र कुमारनी कथा वांची नक्की करी लेजो मारे पण एवुंज circle
गोठववुँ छे - ज्यां बधां एकबीजाना कल्याणमित्र बनी रहे.

एवी गिफ्ट आपीश जे भौतिक नहीं पण आध्यात्मिक रुचि वधारे.

बधा साथे मळी मोज, मजा, मस्ती नहीं पण परमार्थना कार्यो करीए.
बधा साथे मळी सामुदानीक पुण्य बंधाय एवी प्रवृत्तिओ करीशुं, आत्मशुद्धि
माटेनी साधना, आराधना करीशुं...

विभाग - ६ काव्य विभाग

पंच परमेष्ठी भगवंत

बार गुणोथी शोभता, अरिहंत देव छे
चोत्रीस अतिशयोथी दीपता, देवाधिदेव छे
तीर्थनी स्थापना करे ए तो, तीर्थकर देव छे... बार...

आठ गुणोथी शोभता, सिद्ध देव छे
आतम भावमां राचता, विदेही देव छे
सिद्धक्षेत्रमां बिराजीत ए तो, निराकार देव छे... आठ...

छत्रीस गुणोथी शोभता, आचार्य देव छे
शासनना वाहक, ए तो अनुशासक छे
संघनुं संचालन करता, धर्मदेव छे... छत्रीस...

पच्चीस गुणोथी शोभता, उपाध्याय देव छे
भणे अने भणावे एवा, श्रुतप्रसारक छे
स्वाध्याय करावता, ए तो ज्ञानदेव छे... पच्चीस...

सत्यावीस गुणोथी शोभता, साधु-साध्वीजी छे
साधनामां लीन रहे, आत्मोधारक छे
पंच परमेष्ठीमां, ए पंचम देव छे... सत्यावीस...

जैन धर्म सहुथी अनेरो...

राग : तुम्ही हो माता... तुम्ही हो पिता...
जैन धर्म छे अमारो,
केवली प्ररुपित सहुथी न्यारो

अरिहंत-सिद्ध देव अमारा,
निग्रंथ छे गुरु अमारा,
जीवो अने जीववा दो, ए छे नारो,
दुनियामां छे सहुथी अनेरो...जैन...

अहिंसा-सत्यने जीवनमां उतारो,
कषायो सामे कदि ना हारो,
उपदेश आ छे प्रभुनो प्यारो,
अनेकांतवाद छे सहुथी सारो...जैन...

दयामय जीवन जीववुं छे,
प्रेमथी सहु साथे रहेवुं छे,
शत्रु नथी कोई मारो,
विश्वमैत्री ए संकल्प अमारो...जैन...

विनय धर्मनुं मूळ छे...

राग : जीया बेकरार हे....

विनय धर्मनुं मूळ छे, अविनय शूळ छे
समजण वगरनुं जीवन ए तो,
पथ पर पडेली धूळ छे. विनय धर्मनुं...

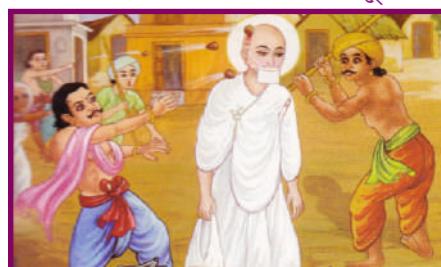


आगमना पाने पाने, विनयना गुणो गवाया छे. (2)

विनय गुणथी ओपता गौतम स्वामी, सहुमां सवाया छे. (2)

नम्रता शांतिनुं मूळ छे, अभिमान ए तो शूळ छे.

कोइपण वातनी पकड ए तो, पथ पर पडेली धूळ छे. विनय धर्मनुं...



क्षमाना गुण महावीर मुखे, वारंवार गवाया छे. (2)

क्षमा गुणथी शोभतां अर्जुनमाळी, सहुमां सवाया छे. (2)

क्षमा मैत्रीनुं मूळ छे, वेरभाव शूळ छे

बदलो कोइथी लेवो ए तो, पथ पर पडेली धूळ छे. विनय धर्मनुं...

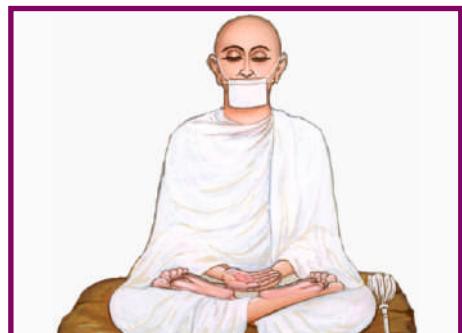


જ્ઞાનીજનોના મુહેથી, ભક્તિના ગુણો ગવાયા છે. (2)

ભક્તિગુણથી શોભતાં, સુલસાજી સવાયા છે. (2)

ભક્તિ મોક્ષનું મૂળ છે, અશાતના એ તો શૂળ છે.

સ્વાર્થ ભરેલું જીવન એ તો, પથ પર પડેલી ધૂળ છે. વિનય ધર્મનું...



વીરપ્રભુના મુહેથી, જેમના ગુણો ગવાયા છે. (2)

તપધર્મથી શોભતા, ધનાજી સવાયા છે. (2)

તપ નિર્જળાનું મૂળ છે. વિષયાસક્તિ શુળ છે.

તપ વિનાનું જીવન એ તો, પથ પર પડેલી ધૂળ છે. વિનય ધર્મનું...

વિનય ધર્મનું મૂળ છે, અવિનય શૂળ છે

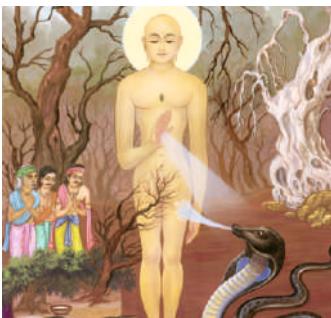
સમજણ વગરનું જીવન એ તો,

પથ પર પડેલી ધૂળ છે. વિનય ધર્મનું...

शुं न कराय

राग : ना ना नारे ना ना...

ना ना नारे ना ना
क्रोध कदि कराय ना...
चंडकौशिक कहे सौने,
क्रोध करी सर्प बनाय ना.



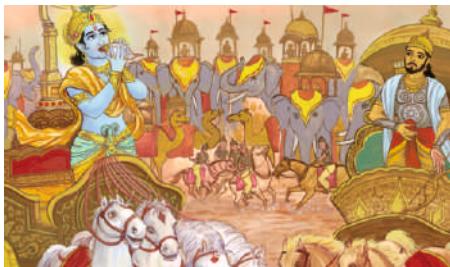
ना ना नारे ना ना
कपट कदि कराय ना...
नागश्री कहे सौने,
कपट करी संसार वधाराय ना.

ना ना नारे ना ना
मान कदि कराय ना...
मरीचिजी कहे सौने,
मान करी नीच गोत्र बंधाय ना.

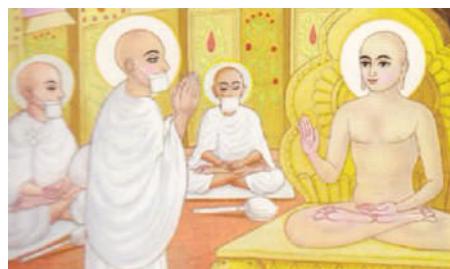


ना ना नारे ना ना
लोभ कदि कराय ना...
मम्मण शेठ कहे सौने,
लोभ करी नरकमां जवाय ना.

ना ना ना रे ना ना
मेणा कदि मराय ना...
द्रौपदीजी कहे सहुने,
मेणा मारी महाभारत रचाय ना.



ना ना ना रे ना ना
दुर्विचार कदि कराय ना...
तंदुल मच्छ कहे सौने,
दुर्विचार करी पापना पोटला बंधाय ना



ना ना ना रे ना ना,
विषयोमां फसाय ना...
कुंडरीकजी कहे सौने,
जीतेली बाजी हारी जवाय ना.



देवानुप्रियो विषय कषायोथी दुर रहेशो ने !

॥ श्री महावीराय नमः ॥

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

॥ नमो नाणसः ॥

श्री ग्रेटर बोम्बे वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ

Shree Greater Bombay Vardhman Sthanakvasi Jain Mahasangh

: संचालित :

मातुश्री मणीबहेन मणशी भीमशी छाडवा धार्मिक शिक्षण बोर्ड

Matushree Maniben Manshi Bhimshi Chhadva- Dharmik Shikshan Board,

Jayant Arcade, office No 202, 2nd floor, M.G. Road, Rajawadi Signal, Ghatkopar (E), Mumbai- 400077

E-mail: jainshikshanboard@gmail.com

Website: www.jaineducationboard.org

Our Website

- Contact Details of Shikshan Board office (Phone & Email)
- News and Events related to examination and breaking news
- Know Goals and Visions of Board
- Facility to enroll for forth coming exam online
- Historical exams and answer papers available form 2016
- Downloadable version of Shreni exam books
- Schedule of forth coming Shreni exams available
- Avail Jain Pathavali Online
- Access Photographs of various events
- View Past exams results

वेब साइटमां माहिती

शिक्षण बोर्डनी ओ?फसना फोन नंबर तथा इ-मेल मेळवी शक्ष. बोर्ड द्वारा आगामी परीक्षानी माहिती विगतवार मूकवामा आवशेः.

बोर्डना हेतु तथा छ्येय जाणवा मळशे.

यार बेठा औनलाईन रजिस्ट्रेशन करी शक्षेही.

2016 थी परीक्षाना पेपर तथा जबाबो मेळवी शक्षाशे.
दोक श्रेणीनो अस्थासक्रम डाउनलोड करी शक्षाशे.

परीक्षा मालेनी माहिती समयसर मळी शक्षो.

जैन पाठावली ओनलाईन मेळवी शक्षो.

प्रोग्रामना फोटो जोई शक्षाशे.

भूतपूर्व अपेली परीक्षानु परिणाम जोई शक्षाशे.
भूलुळु

સુખી થવું કે દુઃખી થવું

સુખી થવું કે દુઃખી થવું,
એ આપણાં હાથની વાત છે
પ્રભુજી કહે છે...
પુણ્ય કરવું કે પાપ કરવું,
એ આપણાં હાથની વાત છે.
પ્રભુજી કહે છે...
પાણી ઢોળશો, ફૂલપાન તોડશો
લીલા લીલા ઘાસ પર આનંદથી ચાલશો
ખોટું બોલશો, ચોરી કરશો,
મિત્રો સાથે ઝગડા કરશો
તો શું થશે? બોલો બોલો શું થશે?
પાપ લાગશો... સુખી થવું...



કીડી બચાવશો, અન્નદાન કરશો
કૂતરાને લાકડી કદી ના મારશો
નવકાર બોલશો, સંત-દર્શન કરશો
ઉપાશ્રયમાં નિત્ય જશો...
તો શું થશે? બોલો બોલો શું થશે?
પુણ્ય બંધાશો... સુખી થવું...



શાંત બનશો, પ્રશાંત બનશો
શિખામણને જીવનમાં ઉતારશો
દ્યા રાખશો, જતના રાખશો,
આજ્ઞા પાલન નિત્ય કરશો,
તો શું થશે? બોલો બોલો શું થશે?
ધર્મી બનશો... સુખી થવું...